विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 1

विधिवत धर्मविज्ञान क्या है

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
नया नियम 1
विधिवत धर्मविज्ञान **2**
बाइबल पर आधारित 3
तर्क पर आधारित 3
परंपरा पर आधारित 4
नए नियम का धर्मविज्ञान **5**
विविधता 5
पास्तरीय चरित्र 6
शैलियाँ 7
आधारभूत ढाँचा 7
ऐतिहासिक घटनाक्रम 8
धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान **9**
सांस्कृतिक परिवर्तन 10
धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन 11
मध्य-कालीन धर्मविज्ञान **14**
सांस्कृतिक परिवर्तन 14
धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन 14
प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान **19**
आरंभिक धर्मसुधारक 19
शास्त्रीय अंगीकार 21
आधुनिक विधिवत प्रक्रियाएँ 22
मूल्य और खतरे 23
मसीही जीवन **24**
वृद्धि 24
रूकावट 25
समुदाय में सहभागिता **26**
वृद्धि 26
रूकावट 27
पवित्रशास्त्र की व्याख्या **27**
वृद्धि 28

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रूकावट 29
उपसंहार 29

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय एक

विधिवत धर्मविज्ञान क्या है

परिचय

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कि एक गन्दे कमरे में बिलकुल भी खड़ा नहीं हो सकता? कॉलेज में मेरा एक साथी था जो ऐसा ही था। जब मैं कक्षा में जाता था तो मैं अक्सर अपनी मेज को गन्दा छोड़ देता था, परंतु वह मेरे पीछे से इसे अक्सर साफ कर दिया करता था। मैं अगले दिन फिर से चीजों को यों ही अस्त-व्यस्त छोड़ देता था और वह फिर से इन्हें साफ कर दिया करता था। एक दिन जब मैं हमारे कमरे से बाहर की ओर जा रहा था तो उसने मुझे रोका और कहा, "तुम्हारी परेशानी क्या है? क्या तुम्हें नहीं पता कि कैसे चीजों को अपनी जगह पर रखना चाहिए?"

जी हाँ, मैंने उसके सामने स्वीकार किया, "मुझे पता है कि कैसे चीजों को अपनी जगह पर रखना चाहिए परंतु मेरे पास करने के लिए और भी बहुत से कार्य हैं जिसके कारण मुझे उन्हें रखने का समय नहीं मिलता।"

मुझे अभी भी उसका उत्तर याद है : "यदि आप कुछ समय निकाल कर चीजों को अपनी जगह पर रख दें, तो स्वयं चकित रह जाओगे कि और कितने काम आप कर सकते हो।"

कई रूपों में मेरे मित्र का विचार मसीही धर्मविज्ञान पर भी लागू होता है। बहुत से ऐसे मसीही विश्वासी हैं जो यह सोचते हैं कि मसीह के लिए बहुत कुछ करना अभी बाकी है इसलिए अपने धर्मविज्ञान को सही करने का समय ही नहीं बचता है। खोए हुओं को जीतना, कलीसियाओं की स्थापना, पवित्रशास्त्र का शिक्षण...जैसी बहुत सी बातें करने के लिए हैं। परंतु वास्तविकता तो यह है कि यदि हम अपने धर्मविज्ञान को विधिवत तरीके से करने के लिए समय निकालते हुए इसे व्यवस्थित करें, तो हम वास्तव में मसीह और उसके राज्य के लिए बहुत अधिक सेवकाई करने योग्य हो जाएंगे।

यह विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम विधिवत धर्मविज्ञान जो कि सुव्यवस्थित और व्यवस्थित या "क्रमबद्ध धर्मविज्ञान" के नामों से भी जाना जाता है, की खोज करेंगे। विधिवत धर्मविज्ञान उन कई तरीकों में से एक है जिसमें पवित्र आत्मा ने मसीही कलीसिया का मार्गदर्शन उसके धर्मविज्ञान को विधिवत या व्यवस्थित तरीके से रखने में किया है। हमने इस अध्याय का शीर्षक, "विधिवत धर्मविज्ञान क्या है," दिया है। इस परिचयात्मक अध्याय में हम विधिवत धर्मविज्ञान के अध्ययन से संबंधित कई मूलभूत विषयों की खोज करेंगे।

हमारा यह अध्याय तीन मुख्य विषयों को स्पर्श करेगा : सर्वप्रथम, हम नए नियम के धर्मविज्ञान की तुलना विधिवत धर्मविज्ञान से करेंगे। वे कैसे एक दूसरे के समान और भिन्न हैं? दूसरा, हम इसके ऐतिहासिक घटनाक्रमों को देखेंगे जिसके फलस्वरूप विधिवत धर्मविज्ञान आया है। यह कहाँ से आया है? और तीसरा, हम विधिवत धर्मविज्ञान के मूल्यों और खतरों को देखेंगे। इस अध्ययन के क्या लाभ और नुकसान हैं? आइए नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच के संबंध की खोज करते हुए आरंभ करें।

नया नियम

नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच के संबंध से आरंभ करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि मसीह के अनुयायी होने के नाते हम पवित्रशास्त्र के निर्विवाद अधिकार के प्रति प्रतिबद्ध हैं, न कि धर्मविज्ञान की किसी अन्य पद्धति के प्रति, चाहे वह कितनी भी अच्छी क्यों न हो। बाइबल को छोड़ कर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

धर्मविज्ञान की कोई भी अन्य पद्धति पापी मनुष्यों की त्रुटियों को ही प्रतिबिम्बित करती है। इसलिए, आरंभ से ही हमारी रूचि इस बात में होनी चाहिए कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान बाइबल से तुलना करता है। वे कौनसे रूप हैं जिनमें यह पवित्रशास्त्र के जैसा है? यह किन रूपों में भिन्न है?

नए नियम के धर्मविज्ञान और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच के संबंध को देखने के लिए हम पहले दो विषयों को स्पर्श करेंगे, पहला विधिवत धर्मविज्ञान की रूपरेखा और दूसरा नए नियम के धर्मविज्ञान की रूपरेखा। आइए सबसे पहले विधिवत धर्मविज्ञान की रूपरेखा को देखें।

विधिवत धर्मविज्ञान

ऐतिहासिक तौर पर कहें तो विधिवत धर्मविज्ञान उन सबसे अधिक प्रभावशील तरीकों में से एक तरीका है जिसमें मसीहियों ने धर्मविज्ञान का निर्माण किया है। सच्चाई तो यह है कि संसार के किसी भी कोने में एक ऐसे मसीही अनुयायी को पाया जाना कठिन होगा जो विधिवत धर्मविज्ञान से प्रभावित न हुआ हो। जब हम परमेश्वर को त्रिएक परमेश्वर के रूप में कहते हैं, अर्थात् परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में पाया जाता है जिनका तत्व एक जैसा है, तो हम विधिवत धर्मविज्ञानियों के किए हुए कार्य पर निर्भर होते हैं; जब हम एक व्यक्तित्व के रूप में मसीह के बारे में बात करते हैं जो पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य है, तो हम ऐसे सिद्धांतों पर कार्य करते हैं जिनकी व्याख्या विधिवत धर्मविज्ञान में की जाती हैं। जब हम नए जीवन, विश्वास, पश्चाताप, पवित्रीकरण, और महिमान्वित किए जाने जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं, तो हम ऐसे शब्दों का उपयोग कर रहे हैं जिन्हें हमारे लिए विधिवत धर्मविज्ञानियों के द्वारा परिभाषित किया गया है। तौभी, चाहे विधिवत धर्मविज्ञान कितना भी ज्यादा प्रभावशील क्यों न हो, अधिकांश मसीही विश्वासियों में आज इसके प्रति अस्पष्ट विचार है कि यह क्या है।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं कि धर्मविज्ञानियों ने धर्मविज्ञान की इस पद्धति को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। परंतु हम एक परिभाषा को देखते हुए पारंपरिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान के केन्द्रीय विचार के बारे में जान सकते हैं जो कि लुईस ब्रकोफ़ की जानी-पहचानी पुस्तक विधिवत धर्मविज्ञान से आती है, जिसे उसने बीसवीं सदी के मध्य में लिखा था।

अपनी पुस्तक के चौथे अध्याय में, ब्रकोफ़ ने अपने अध्ययन की परिभाषा इस तरह से दी है :

> **विधिवत धर्मविज्ञान मसीही धर्म के सभी सैद्धांतिक सत्यों का विधिवत प्रस्तुतीकरण देने का प्रयास करता है।**

सरल रूप से कही गई यह परिभाषा विधिवत धर्मविज्ञान के तीन पहलुओं पर प्रकाश डालती है : पहला, यह स्वयं को “सत्य” के साथ जोड़ती है। दूसरा, यह सत्य को एक “विधिवत” पद्धति में विभिन्न सत्यों के बीच स्थापित तार्किक संबंधों के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। और तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञान “मसीहियत” के संदर्भ के भीतर निर्मित होता है।

ब्रकोफ़ की परिभाषा के ये तत्व हमारे विचार विमर्श का तीन दिशाओं में मार्गदर्शन करेंगे : पहला, हम इस तथ्य की ओर देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत सत्यों का अनुसरण करने के द्वारा बाइबल पर आधारित बने रहने का प्रयास करता है। दूसरा, हम यह देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञान तार्किक रूप से सुसंगत एक ऐसी पद्धति का निर्माण करता है जिसमें बाइबल पर आधारित प्रत्येक सत्य को अन्यों के साथ संबंध में समझा जा सकता है। और तीसरा, हम उन तरीकों के पर विचार करेंगे जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक तथ्यों और प्राथमिकताओं का अनुसरण करता है। सबसे पहले इस सच्चाई पर विचार करें कि विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल पर आधारित होना चाहिए।

बाइबल पर आधारित

ब्रकोफ़ विधिवत धर्मविज्ञान की बाइबल पर निर्भरता के विषय में कहते हैं, जब वे यह कहते हैं कि विधिवत विज्ञान का संबंध "सैद्धांतिक सत्यों" से है। क्योंकि प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्री सोला स्क्रिप्चरा अर्थात् केवल पवित्रशास्त्र के प्रति प्रतिबद्ध हैं, इसलिए यह कहना कि हमारा ध्यान सैद्धांतिक सत्यों पर केन्द्रित है का अर्थ यह है कि हमारे संपूर्ण धर्मविज्ञान को बाइबल के अनुसार ही होना चाहिए। और वास्तव में हम अपने अधिकांश विधिवत सिद्धांतों को सीधे बाइबल से ही लेते हैं। ब्रकोफ़ ने अपने विधिवत धर्मविज्ञान में इस टिप्पणी के साथ इस बिन्दु को पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है:

> विधिवत-शास्त्रियों को यह दर्शाना अवश्य है कि विधिवत धर्मविज्ञान अपनी जड़ को पवित्रशास्त्र की भूमि की गहराई में रोपित करता है।

दुर्भाग्य से, मसीहियों ने सदैव विधिवत धर्मविज्ञान के विषय में इस तरह से नहीं सोचा है। बाइबल आधारित शिक्षाओं में विधिवत रूप को मजबूत करने के स्थान पर धर्मविज्ञानी कम से कम तीन मूलभूत दिशाओं की ओर चले गए हैं। कुछ धर्मविज्ञानियों ने यह देखा है कि विधिवत धर्मविज्ञान सामान्य रूप से कलीसियाई परंपरा या धर्मशिक्षा में निहित है। वे इसे केवल अभी तक के कलीसियाई इतिहास की शिक्षाओं के सावधानी से किए हुए विश्लेषण के रूप में देखते हैं। अन्य धर्मविज्ञानियों ने विधिवत धर्मविज्ञान को मुख्य रूप से धार्मिक अनुभव में निहित होने में देखा है; ये धर्मविज्ञानी मनुष्यों की धार्मिक कल्पनाओं और आत्मबोधों को विधिवत रूप में लाना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त और भी अन्य धर्मविज्ञानियों ने मसीही विश्वास से दूर उन दर्शनशास्त्रीय विचारों की ओर उस भूमि के रूप में देखा है जिसपर विधिवत धर्मविज्ञान का विकास हुआ है। फलस्वरूप, इन धर्मविज्ञानियों ने विधिवत धर्मविज्ञान को धर्म के दर्शनशास्त्र में परिवर्तित कर दिया है।

अब, प्रत्येक व्यक्ति जो विधिवत धर्मविज्ञान में कार्यरत् है वह कलीसियाई परंपरा, धार्मिक अनुभव, और दर्शनशास्त्रीय अवधारणाओं को कुछ सीमा तक सम्मिलित करता है। परंतु हमारे इन अध्यायों में, हम शुद्ध विधिवत धर्मविज्ञान को एक ऐसे अनुशासन के रूप में परिभाषित करेंगे जो कि अंतत: पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं में निहित है। हम अपने विधिवत धर्मविज्ञान को कलीसियाई परंपरा, धार्मिक अनुभव या दर्शनशास्त्र पर आधारित करने की खोज नहीं कर रहे हैं। स्वयं मसीह के जैसे हम समझते हैं कि सारा अच्छा धर्मविज्ञान, जिसमें विधिवत धर्मविज्ञान भी सम्मिलित है, को बाइबल आधारित ही होना चाहिए।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल पर आधारित होने का प्रयास करना चाहिए, इसलिए हमें विधिवत धर्मविज्ञान के तार्किक रूप से सुंसगत होने, अर्थात् पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को विधिवत रूप में व्यवस्थित करने के प्रयास पर ध्यान देना चाहिए।

तर्क पर आधारित

जैसे कि ब्रकोफ़ की परिभाषा इंगित करती है कि, यह अध्ययन "सभी सैद्धांतिक सत्यों का विधिवत प्रस्तुतीकरण देने का प्रयास" करता है। या, जैसे कि उसने किसी और जगह विस्तार से कहा :

> विधिवत-शास्त्री सैद्धांतिक सत्यों को एक विधिवत संपूर्णता में जोड़ने का प्रयास करता है।

इस दृष्टिकोण में, एक विधिवत धर्मविज्ञानी का कार्य मसीही मान्यताओं का सार निकालने का है ताकि वह एक व्यापक, व्यवस्थित, यहाँ तक की तर्कसंगत व्यवस्था का निर्माण करे। विधिवत-शास्त्री यह स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं कि कैसे पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ मान्यताओं की एक एकीकृत तार्किक व्यवस्था को प्रकट करती हैं।

प्रत्येक युग में, बहुत से मसीही विश्वासी अपनी मान्यताओं को अपेक्षाकृत असंगत रूप में छोड़ देने में संतुष्ट रहे हैं। हम परमेश्वर के बारे में कुछ बातों पर विश्वास करते हैं। हम विश्वास और उद्धार के बारे में अन्य बातों में विश्वास करते हैं। हमारे पास नैतिकता और सदाचार के बारे में अन्य मान्यताएँ हैं। यद्यपि अधिकांश मसीही विश्वासी बहुत सी बातों पर विश्वास करते हैं, फिर भी हम अक्सर अपनी मान्यताओं को एक दूसरे से अलग रहने देते हैं।

इसके विपरीत, विधिवत धर्मविज्ञान मसीही मान्यताओं की सुंसगति को उच्च शिखर पर रखते हुए प्रदर्शित करता है। विधिवत-शास्त्री जो कुछ पवित्रशास्त्र सिखाता है उसके छोटे छोटे हिस्सों को लेते हैं और जितना संभव हो सके उसके सुसंगत और व्यापक रूप में उनके आपस के तार्किक संबंधों को सिखाने और स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। वास्तव में, इसलिए ही इस अनुशासन को विधिवत धर्मविज्ञान कहा जाता है। लक्ष्य यहाँ बाइबल द्वारा सिखाई गई धर्मविज्ञान कीपद्धति को प्रकट करना है।

तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञान न केवल बाइबल पर आधारित और तार्किक रूप से स्पष्ट होने का प्रयास करता है, बल्कि पारंपरिक मसीही विश्वास के साथ सुसंगति बनाए रखने का भी। ऐसा करने में यह उन सिद्धांतों पर ध्यान लगाता है जिन्हें इतिहास ने कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण होने के रूप दिखाया है।

परंपरा पर आधारित

ब्रकोफ़ की परिभाषा ने यह कहते हुए इस विषय को संबोधित किया कि विधिवत धर्मविज्ञान सैद्धांतिक सत्यों के साथ “मसीही धर्म” के रूप में व्यवहार करता है।

अपनी परिभाषा के इस पहलू पर उसने इसे इस तरह से विस्तारपूर्वक बताया है :

> **[विधिवत-शास्त्री]... इस अवधारणा पर कार्य नहीं करेगा कि अतीत के सैद्धांतिक विकास एक बहुत बड़ी त्रुटि थे, और इसलिए उसे अपने कार्य को बिलकुल आरंभ या पूर्ण रूप से नए तरीके से करना चाहिए।**

विधिवत धर्मविज्ञान में हम मसीही धर्म के संदर्भ में, पारंपरिक धर्मविज्ञानीय महत्व और प्राथमिकताओं के संदर्भ में, धर्मसिद्धांतों को देखने की कोशिश करते हैं। इसलिए विधिवत धर्मविज्ञान न केवल बाइबल के साथ आदान प्रदान करना है बल्कि उन मुख्य तरीकों के साथ भी जिनमें बाइबल की शिक्षाओं को अभी तक के कलीसियाई इतिहास में धर्मविज्ञानियों द्वारा व्यक्त किया गया है।

पारंपरिक महत्व के साथ ये दृष्टिकोण यह व्याख्या करता है कि क्यों लगभग प्रत्येक विश्वनीय प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान एक ही जैसे मूलभूत ढाँचे का अनुसरण करता है। धर्मविज्ञानीय चिन्तनों के केन्द्रीय विचारों का अनुसरण करते हुए जो कि कई सदियों में विकसित हुए हैं, विधिवत-धर्मशास्त्री अक्सर पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों को इस तरीके से संगठित करते हैं। वे या तो बाइबल-विज्ञान, जो कि पवित्रशास्त्र का सिद्धांत है, या फिर ईश-विज्ञान या उचित धर्मविज्ञान, जो कि परमेश्वर का सिद्धांत है, के साथ आरंभ करते हैं। फिर वे मानव-विज्ञान की ओर मुड़ते हैं, जो कि मनुष्य का सिद्धांत है, और विशेषकर मनुष्य की उद्धार की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। फिर वे उद्धार-विज्ञान का उल्लेख करते हैं, जो कि उद्धार का सिद्धांत है। इसके बाद, वे कलीसियाई-विज्ञान, जो कि कलीसिया का सिद्धांत है और अंत में, युगांतविज्ञान, जो कि अंतिम बातों का सिद्धांत है उसका उल्लेख करते हैं। मूल क्रम विधिवत धर्मविज्ञान की विशेषताएं हैं क्योंकि विधिवत-धर्मशास्त्री अपनी इन प्राथमिकताओं को पारंपरिक मसीही धर्मविज्ञान की रूपरेखा से प्राप्त करते है।

इस तरह से, हम कम से कम विधिवत धर्मविज्ञान की तीन मूलभूत विशेषताओं को देख सकते हैं। शुद्ध प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मवैज्ञानी एक ऐसे धर्मविज्ञान की रचना करने की कोशिश करते हैं कि जो बाइबल-आधारित, तार्किक रूप से सुसंगत और अपने महत्वों और प्राथमिकताओं में पारंपरिक हो।

अब क्योंकि हमने विधिवत धर्मविज्ञान की रूपरेखा को तैयार कर लिया है, इसलिए हमें अपने अगले विषय : नए नियम के धर्मविज्ञान की पद्धतियों की ओर मुड़ना चाहिए।

नए नियम का धर्मविज्ञान

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अच्छे विधिवत-धर्मशास्त्री पुराने नियम को सम्मिलित करते हुए पूरी बाइबल पर अपना ध्यान देते हैं, परंतु इस अध्याय में, हम स्वयं को विधिवत धर्मविज्ञान और नए नियम के धर्मविज्ञान के मध्य की तुलना तक ही सीमित रखेंगे।

कई तरह से, जैसे ब्रकोफ़ ने सुझाव दिया है, विधिवत धर्मविज्ञान को नए नियम में रोपित एक वृक्ष के रूप सोचना उचित है। पहले स्थान पर यह रूपक सहायतापूर्ण है क्योंकि यह हमें स्मरण दिलाता है कि विधिवत धर्मविज्ञान अपने जीवन को पवित्रशास्त्र से पोषित करता है। शुद्ध विधिवत-धर्मशास्त्री अपने कथनों को जितना ज्यादा सम्भव हो सके उतना नए नियम के कथनों के अनुरूप बनाने की कोशिश करते हैं। इस भाव में, अच्छा विधिवत धर्मविज्ञान बहुत कुछ नए नियम के धर्मविज्ञान की तरह ही होता है।

परंतु दूसरे स्थान पर, बहुत कुछ एक वृक्ष की तरह, विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र की भूमि से बहुत आगे और दूर तक फैला हुआ होता है। कहने का अर्थ यह है कि यद्यपि विधिवत धर्मविज्ञान नए नियम में से ही विकसित हुआ है, परंतु यह नए नियम से बहुत अधिक भिन्न सीमा में विकसित हुआ है।

इन भिन्नताओं को देखने के लिए हम नए नियम के धर्मविज्ञान की चार विशेषताओं को स्पर्श करेंगे जो कि विधिवत धर्मविज्ञान से इसे अलग करती हैं : सर्वप्रथम, नए नियम के धर्मविज्ञान की संबंधात्मक विविधता; दूसरा नए नियम का पास्तरीय चरित्र; तीसरा, वे शैलियाँ जिनका उपयोग नए नियम के धर्मविज्ञान को व्यक्त करने के लिए किया गया है; और चौथा, नए नियम का आधारभूत ढाँचा। आइए उन विविध शब्दावलियों और श्रेणियों को देखते हुए आरंभ करें जिन्हें हम नए नियम में पाते हैं।

विविधता

जैसा कि हमने देखा है, विधिवत धर्मविज्ञान उन विषयों के चारों ओर निर्मित हुआ है जिन पर कलीसिया के इतिहास में बार-बार विचार विमर्श किया गया है। इस लंबे इतिहास ने शब्दों और श्रेणियों की अपेक्षाकृत एकीकृत सूची को निर्मित किया है जिसका अनुसरण सभी विधिवत-धर्मशास्त्री निरंतर करने की प्रवृति रखते हैं। निश्चित होने के लिए, विभिन्न विधिवत धर्मविज्ञानी स्वयं को भिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं; वे कठोरता से एक ही विचार का पालन नहीं करते। परंतु विधिवत धर्मविज्ञान अपने आप में पूरी तरह से उच्च स्तरीय रूप में मानकीकृत है ताकि शब्द और श्रेणियाँ एक ही तरीके से उपयोग की जाएं।

नया नियम इस तरह की व्यापक एकरूपता को नहीं दर्शाता है। नए नियम के शब्दों और श्रेणियों में विधिवत धर्मविज्ञान की अपेक्षा बहुत ज्यादा विविधता है। अब, हमें यहाँ पर सचेत रहना चाहिए कि कहीं हम विषय को बढ़ा-चढ़ा कर न कह दें। बहुत से केन्द्रीय और मूलभूत मसीही विषयों पर नए नियम के लेखकों ने एक जैसी ही शब्दावली के भंडार, अवधारणाओं और विचारों के ढाँचे को साझा किया है। ऐसा नहीं है कि मानो नए नियम का धर्मविज्ञान इतना ज्यादा द्रव्य था कि उसमें बिलकुल भी एकरूपता नहीं थी।

उदाहरण के लिए, उन सब ने पुराने नियम की शिक्षाओं से परमेश्वर का एक जैसा वर्णन किया। उन सभों ने यह शिक्षा दी है यीशु ही ख्रिस्त या मसीह है और इसके अर्थ के प्रति कई पेचीदा मान्यताओं को साझा किया है। वे पाप और उद्धार जैसे शब्दों के मूलभूत अर्थों के लिए आपस में सहमत थे। ऐसी मूलभूत समानताओं की सूची बहुत ही व्यापक है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिर भी, इन समानताओं के साथ साथ, यह स्पष्ट है कि नए नियम का धर्मविज्ञान बहुत अधिक विविध तरह का था। नए नियम के विभिन्न लेखकों ने उनके धर्मविज्ञान को विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया है।

उनकी भिन्नताओं का एक कारण सचेत जैविक या मार्मिक प्रेरणा में पाया जा सकता है। पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखकों को त्रुटि से और एक दूसरे के साथ विरोधाभासी होने से बचाया, परंतु उसे नए नियम के लेखकों की शब्दावलियों और श्रेणियों को एक जैसा ही नहीं होने दिया कि वे एक समान हो जाएं। बाइबल के प्रत्येक लेखक ने अपनी पृष्ठभूमि, अपने व्यक्तित्व, और अनुभवों के दृष्टिकोण से लिखा। फलस्वरूप, नए नियम के लेखकों ने मसीही विश्वास में संतुलन को प्रकट किया, परंतु भिन्न तरीकों से।

इसी कारण पौलुस के द्वारा मसीही विश्वास की व्याख्या किया जाना ठीक लूका जैसा नहीं है। यूहन्ना, मत्ती से भिन्न है। मरकुस, पतरस से भिन्न है। विधिवत धर्मविज्ञान में मापदंड वाले तरीकों से रखी हुई बातों की तुलना से, नए नियम का धर्मविज्ञान बहुत ही ज्यादा भिन्न है।

बहुत ज्यादा भिन्न होने के अतिरिक्त, नये नियम का धर्मविज्ञान विधिवत धर्मविज्ञान् की अपेक्षा बहुत ज्यादा पासबानी या पास्तरीय है।

पास्तरीय चरित्र

विधिवत धर्मविज्ञान को तार्किक रूप से सुसंगत, मसीही विश्वास की शिक्षाओं के व्यापक अर्थ के लिए निर्मित किया है। यह विशेषकर स्थाई, विश्वयापी सत्यों पर केन्द्रित होती है। और इसके फलस्वरूप, यह अक्सर ऐसी बातों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो कि अमूर्त, परिकल्पनीय गुण वाली होती हैं जैसे कि स्वयं परमेश्वर और प्रायश्चित के सिद्धांत, संस्कार और अन्य कई अमूर्त विषय।

इसके विपरीत, नए नियम का धर्मविज्ञान बहुत ही ज्यादा पास्तरीय है। नए नियम के लेखकों ने अपने धर्मविज्ञान का कई तरीकों से उल्लेख किया है जो कि विशेष तरीकों में अपेक्षाकृत विशेष आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं। एक बार फिर से, हमें सचेत रहना चाहिए कि इन बातों को बढ़ा-चढ़ा कर न कहें। नये नियम के लेखकों ने अंतकालीन, अमूर्त सत्यों को भी स्पर्श किया था। परंतु उनके अधिकतर लेखों में उन विशेष चुनौतियों का उल्लेख किया गया है जिनका उनके दिनों में भिन्न भिन्न विश्वासियों ने सामना किया था।

उदाहरण के लिए, पास्तरीय ध्यान यह स्पष्ट करता है कि क्यों पौलुस के पत्र एक दूसरे से इतने ज्यादा भिन्न हैं। यदि पौलुस ने विधिवत धर्मविज्ञान को लिखने की मंशा की होती तो उसने बस केवल एक ही पत्र को लिखा होता। परंतु उसके पत्रों में विषय वस्तु और महत्व नाटकीय ढंग से भिन्न हैं क्योंकि प्रत्येक पत्र भिन्न कलीसिया की भिन्न आवश्यकता को संबोधित करता है।

बिना किसी संदेह के, नए नियम के सभी लेखकों में धर्मविज्ञान की गहन समझ थी। परंतु जब बात नए नियम के लेखों में उनके धर्मविज्ञान को व्यक्त करने की आई, तो उन्होंने इस तरह के ऊँचे विचारों की व्याख्या करने की कोई परवाह नहीं की। इसकी अपेक्षा, उनका लक्ष्य लोगों के लिए उनकी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में धर्मविज्ञान को लागू करने के लिए पासबानी था। इसलिए सिद्धांतों के तार्किक स्पष्टीकरण पर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा नए नियम के लेखकों ने लोगों की वास्तविक, व्यावहारिक आवश्यकताओं, और उन तरीकों पर ध्यान केन्द्रित किया जिनमें धर्मविज्ञान ने इन आवश्यकताओं को पूरा किया। और फलस्वरूप, उनके धर्मवैज्ञानिक लेख मापदंड के रूप से विधिवत धर्मविज्ञान से बिलकुल भिन्न दिखाई दिए।

तीसरे स्थान पर, नए नियम का धर्मविज्ञान विधिवत धर्मविज्ञान से इसलिए भिन्न है क्योंकि नया नियम अपने धर्मविज्ञान को विभिन्न तरह की शैलियों में व्यक्त करता है। नए नियम के लेखकों ने विभिन्न तरह के कई साहित्यिक रूपों और शैलियों का उपयोग किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शैलियाँ

विधिवत धर्मविज्ञान एक ही मूलभूत शैली से लिखा हुआ है: जिसे हम विस्तरित निबन्ध या आलेख कह सकते हैं। लगभग सब कुछ जो विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट होता है इस तरह की गद्य शैली में लिखा हुआ है।

इसके विपरीत, नए नियम का धर्मविज्ञान विभिन्न तरह की शैलियों में व्यक्त किया गया है। नए नियम में कई विभिन्न प्रकार के साहित्य प्रकट होते हैं। विशाल रूप में कहें तो इसमें साहित्य के दो मुख्य प्रकार पाए जाते हैं: कहानियाँ और पत्र। सुसमाचार और प्रेरितों के काम नामक पुस्तकें मूल रूप से कहानियाँ हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि बाकी का नया नियम पत्रियाँ या पत्र हैं। और नए नियम की कहानियों और पत्रियों में हम भजनों, प्रार्थनाओं, आदेशों, दोषों, पास्तरीय आग्रहों, दर्शनों, उपदेशों और साहित्य के कई अन्य प्रकारों को भी पाते हैं। ये शैलियाँ विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत ही कम प्रकट होती हैं।

नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के मध्य बहुत सी भिन्नताएँ भी प्रकट होती हैं जब हम उनकी मूलभूत धर्मविज्ञानीय रूपरेखा या ढाँचे की तुलना करते हैं, अर्थात्, जिस तरह से वे एक दूसरे से संबंध बनाते हुए धर्मविज्ञान को संगठित करते हैं।

आधारभूत ढाँचा

विधिवत धर्मविज्ञान विशेष रूप से कलीसियाई इतिहास में सदियों से विकसित एक मूलभूत रूपरेखा का अनुसरण करता है। जैसा कि हमने पहले ही देखा है कि लगभग सभी प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञानी या धर्मशास्त्री इन्हीं विचारों पर निर्मित हैं अर्थात् सबसे पहले पवित्रशास्त्र का सिद्धांत, या परमेश्वर का सिद्धांत – फिर, मनुष्य का धर्मविज्ञान, उद्धार का धर्मविज्ञान, कलीसिया का धर्मविज्ञान और युगांत संबंधी धर्मविज्ञान आता है।

अब, नए नियम के साथ परिचित प्रत्येक व्यक्ति को समझ जाना चाहिए कि नए नियम के लेखकों ने इन सभी विषयों को स्पर्श किया है। नया नियम पवित्रशास्त्र, परमेश्वर, मनुष्य, उद्धार, कलीसिया और अंतिम दिनों के विषय में शिक्षा देता है। परंतु साथ ही, यह जानकारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि विधिवत धर्मविज्ञान के विपरीत, नया नियम इन विचारों के साथ असंगठित है। इसकी अपेक्षा, नए नियम के लेखक विस्तृत रूप में अपने धर्मविज्ञान को परमेश्वर के मसीह आधारित राज्य के विषय के चारों ओर निर्मित करते हैं।

मसीह के आगमन से सदियों पहले, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने यह प्रकट कर दिया था कि परमेश्वर इस्राएली जाति को उनके पाप के कारण बंधुवाई में ले जाने और अन्यजातियों के अत्याचार के द्वारा सजा देगा। परंतु भविष्यवक्ताओं ने यह भी घोषणा की थी कि अंतिम दिनों में परमेश्वर इस्राएल की बंधुवाई का अंत करेगा और विजय और आशीष के एक नए दिन को ले आएगा। और वह यह कार्य उसके मसीह के द्वारा करेगा, जो कि इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को, परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध अंतिम न्याय और विश्वासयोग्य यहूदियों और अन्यजातियों के लिए अंतिम आशीषों को लाने के द्वारा स्थापित करेगा। नए नियम के आने के समय तक यहूदियों की कई पीढ़ियों ने बंधुवाई में कठिनाइयों से दुख को उठाया था, और जिसके फलस्वरूप, मसीह के आगमन, और उसके साथ परमेश्वर के राज्य की अंतिम अवस्था, सारे यहूदी धर्मविज्ञान को संगठित करते हुए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण केन्द्रीय विषयों में से एक विषय बन गया था। यहूदी धर्मविज्ञानी बुरी तरह से ऐसे प्रश्नों से भरे हुए थे : “मसीहा कब आएगा?” “कैसे मसीहा न्याय महान के दिन और आशीषों को लाएगा?” और, “कैसे परमेश्वर के लोगों को मसीहा की प्रतीक्षा में जीवन जीना चाहिए?"

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ये विषय भी नए नियम के लेखकों के लिए मुख्य चिन्ता के विषय थे। नए नियम के लेखकों ने अपने धर्मविज्ञान को परमेश्वर के राज्य की अंतिम अवस्था और मसीह के चारों ओर निर्मित किया। परंतु उन्होंने ऐसा विशेष रूप से मसीही तरीकों में किया।

यीशु और उसके प्रेरितों ने स्पष्ट किया कि बंधुवाई के अंत में और परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य का आगमन एक सरल, सीधे साधे तरीके से नहीं प्रकट होगा जैसा कि अधिकांश यहूदी धर्मविज्ञानियों ने अपेक्षा की थी। नए नियम के लेखकों के मूल लक्ष्यों में से एक यह उल्लेख करना था कि बंधुवाई और पाप के इस युग से प्रतिज्ञात् परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य में परिवर्तन एक जटिल और विस्तृत प्रक्रिया है। नए नियम के अनुसार, यीशु ने बंधुवाई के अंत और प्रतिज्ञात् मसीहारुपी राज्य का उदघाटन किया जब वह इस पृथ्वी पर यहाँ था। एक दिन मसीह पुनः आएगा और अपने राज्य को अंतिम न्याय और आशीष की महिमामयी पराकाष्ठा अर्थात् शिरो-बिन्दु पर ले आएगा। परंतु उस समय तक, बंधुवाई के युग और परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य का युग एक साथ अस्तित्व में बने रहेंगे।

नए नियम के लेखको ने जो कुछ विश्वास किया उसे इसी मूलभूत रूपरेखा के अनुसार निर्मित किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने परमेश्वर की अमूर्त रूप में व्याख्या नहीं की, वे तो मूलभूत रूप से यह व्याख्या करने में रूचि रखते थे कि कैसे परमेश्वर ने पाप के इस युग में कार्य किया है, वह कैसे अब युगों के एक दूसरे पर होने के मध्य में कार्य करता है और कैसे वह आने वाले युग में कार्य करेगा। वे मसीह के सिद्धांत पर कोई सैद्धांतिक विचार विमर्शों को प्रस्तुत नहीं करते। इसकी अपेक्षा, वे व्याख्या करते हैं कि राज्य के आरंभ में, निरंतरता और शिरोबिन्दु के समय में वह कौन था।

पवित्र आत्मा का भी इन तीन अवस्थाओं में वर्णन किया गया है कि, “वह जो आया था,” “वह जो अब कलीसिया को सामर्थी बनाता है,” और “वह जो एक दिन सब को परिपूर्ण कर देगा।” यहाँ तक कि उद्धार के सिद्धांत को इसी अवधारणीय नमूने पर रूपरेखित किया गया है। उद्धार कुछ ऐसी बात थी जिसे पहले से ही प्राप्त कर लिया गया है, परंतु इसे राज्य की निरंतरता के मध्य में भी प्राप्त किया जा रहा है और यह पूरी तरह से तब प्राप्त किया जाएगा जब मसीह अपनी महिमा में पुनः वापस आएगा। इस अर्थ में, नए नियम की मूलभूत रूपरेखा विधिवत धर्मविज्ञान की मूलभूत रूपरेखा से बिलकुल ही भिन्न है।

इस तरह से हम विधिवत धर्मविज्ञान और नए नियम के धर्मविज्ञान के बीच की तुलना के द्वारा प्रकट होती हुई समानताओं और भिन्नताओं को देखते हैं। विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में निहित है; इसके सारे कथन और धर्मवैज्ञानिक दावे समान धर्मसिद्धांतों और तथ्यों की पुष्टि करते हुए बाइबल के प्रति सच्चे होने चाहिए। इस अर्थ में, ये दोनों एक दूसरे से बहुत सदृश हैं। परंतु इसके साथ-साथ, विधिवत धर्मविज्ञान और नए नियम के धर्मविज्ञान में अत्यन्त महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी हैं।

अब क्योंकि हमने नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के मध्य स्थापित संबंध की खोज कर ली है, हम अब अपने दूसरे विषय : मसीही कलीसिया के अब तक के इतिहास में विधिवत धर्मविज्ञान के विकास पर विचार विमर्श करने के लिए तैयार हैं।

ऐतिहासिक घटनाक्रम

जैसा कि हमने देखा है, विधिवत धर्मविज्ञान् कई विशेष तरीकों से नए नियम के धर्मविज्ञान से भिन्न है। परंतु ये भिन्नताएँ कई गंभीर प्रश्नों को उठाती हैं : “ प्रोटेस्टेंटवादियों ने, जो पवित्रशास्त्र के प्रति बहुत समर्पित हैं, एक ऐसी धर्मवैज्ञानिक पद्धति का समर्थन क्यों किया हैं जो नए नियम से बहुत ज्यादा भिन्न है?” “ विधिवत धर्मविज्ञान विश्वासयोग्य मसीहियों के लिए धर्मविज्ञान के निर्माण का एक सबसे प्रतिष्ठित तरीका कैसे बन गया?"

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम इस विषय को संक्षेप में ऐसे प्रस्तुत कर सकते हैं। विधिवत धर्मविज्ञान कलीसिया के द्वारा बदलते हुए संसार में सेवा करते हुए और इसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एक लम्बी प्रक्रिया में से होकर आया है। जैसे जैसे मसीहियत यरूशलेम से संसार के अन्य भागों में फैलती चली गई, मसीही धर्मविज्ञानियों को कई प्रकार के बदलावों और चुनौतियों के प्रति उत्तर देना था। और उन्होंने इसे कई भागों में बाइबल की शिक्षाओं को स्पष्ट करने और लागू करने के द्वारा किया। अंत में, जिन रणनीतियों का उन्होंने उपयोग किया वे विधिवत धर्मविज्ञान के रूप में विकसित हो गईं।

सर्वप्रथम, बहुत से मसीहियों ने सांस्कृतिक बदलावों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए अपने विचार को धर्मविज्ञान के रूप में आकार देना सोचा। परंतु नया नियम यह स्पष्ट कर देता है कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हमारा उत्तरदायित्व पवित्रशास्त्र में प्रकट सत्य को मजबूती से थामे रहना है और इस सत्य को ऐसे संप्रेषित करना है ताकि अन्य लोग इसे समझ सकें। सच्चाई तो यह है कि स्वयं मसीह ने हमें महान आदेश में ऐसा करने की शिक्षा दी है। मत्ती 28:19-20 में उसके शब्दों को सुनिए :

> **इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्राआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ (मत्ती 28:19-20)।**

यहाँ पर कुछ ध्यान दीजिए : यीशु ने यह नहीं कहा कि, “इसलिए जाओ और सारी जातियों के लोगों को बाइबल पढ़कर सुनाओ।” अब, पवित्रशास्त्र का सार्वजनिक पाठन कलीसिया के मिशन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, परंतु यह वह बात नहीं है जिसे यीशु ने महान आदेश में करने के लिए आज्ञा दी है। उसके इस आदेश को पूरा करने के लिए हमें उसके वचन की “शिक्षा” देनी है, उसके पवित्रशास्त्र की शिक्षा देनी है।

दूसरे शब्दों में, हमें पवित्रशास्त्र के सत्यों को संप्रेषित करने के लिए तरीकों की खोज करनी है, और इसमें हमेशा जो कुछ हम बाइबल में पाते हैं उसको आकार देना और स्पष्ट करना सम्मिलित होता है ताकि हमारे चारों ओर के लोग इसे समझ सकें। शिक्षण की इच्छा, प्रभावशाली तरीके से संप्रेषण, और महान आदेश को पूरा करने के द्वारा ही विधिवत धर्मविज्ञान अस्तित्व में आया है और आज भी निरंतर बना हुआ है।

हम संक्षेप में तीन मुख्य ऐतिहासिक घटनाक्रमों का विवरण देंगे जिन्होंने इस विधिवत धर्मविज्ञान का मार्गदर्शन किया है जिसे हम आज देखते हैं : पहला धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान, जो कि मोटे तौर पर 150 ईस्वी से 600 ईस्वी तक बना रहा, और फिर यह विधिवत धर्मविज्ञान की ओर बढ़ने लगा। दूसरा, मध्यकालीन धर्मविज्ञान जो कि मोटे तौर पर 600 ईस्वी से लेकर 1500 ईस्वी तक बना रहा, जब धर्मविज्ञान के प्रति दृष्टिकोणों का विकास हो रहा था जो कि विधिवत धर्मविज्ञान के लिए तत्काल रूप से अग्रदूतों के समान था। और तीसरा, प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान, वे रूप जिनमें प्रोटेस्टेंट लोगों ने 1500 ईस्वी से लेकर आज तक विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण किया है। आइए मसीह और इसके प्रेरितों के समय के पश्चात् धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य विधिवत धर्मविज्ञान की ओर होने वाले कुछ आरंभिक आन्दोलनों से आरंभ करें।

धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान

विधिवत धर्मविज्ञान की ओर इस मुख्य कदम को समझने के लिए हम दो विषयों को स्पर्श करेंगे : पहला, प्रेरितों के बाद कलीसियाई धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य कलीसिया द्वारा अनुभव किए गए सांस्कृतिक परिवर्तन; और दूसरा, वे धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन जो कि संस्कृति में आए इन परिवर्तनों के

फलस्वरूप सामने आए। आइए सर्वप्रथम उन सांस्कृतिक परिवर्तनों से आरंभ करें जो कि धर्माध्यक्षीय-कालीन अवधि के मध्य घटित हुए।

सांस्कृतिक परिवर्तन

सबसे बड़े परिवर्तनों में से एक जिसका आरंभ की कलीसिया ने प्रेरितों के समय के पश्चात् सामना किया वह मसीहियत के केंद्र का का अपने घर फिलिस्तीन से अन्यजाति में एक नए घर की ओर बढ़ना था। यह परिवर्तन इतना ज्यादा निर्णायक था कि यहूदियों की अपेक्षा, अन्यजाति के लोग कलीसिया के अग्रणी धर्मवैज्ञानिक बन गए।

नेतृत्व में आए इस परिवर्तन ने उन तरीकों में विशेष परिवर्तनों किए जिसमें मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण हुआ था। जब अन्यजाति से आए हुए धर्मविज्ञानियों ने उनके अन्यजाति संसार में सुसमाचार की सेवा करने का प्रयास किया तो वे अपने विश्वास की व्याख्या और बचाव उन तरीकों में करने लगे जो कि उस समय की यूनानी-रोमी संस्कृति के लिए प्रासंगिक थे। वे मसीहियत की व्याख्या अपने दिनों के यूनानी दार्शनिक विचारों के संदर्भ में करने लगे।

अत्यन्त रूचिपूर्ण बात तो यह है कि मसीही विश्वासी पहले लोग नहीं थे जो पवित्रशास्त्र को यूनानी विचारधारा वाली संस्कृति के साथ सार्थक तरीके से संपर्क में लाए। मसीह के आगमन से सदियों पहले, असँख्य यहूदी अन्यजाति संसार में पूरी तरह बिखरे हुए थे। जब वे उस संसार में अपने पुराने नियम के विश्वास के अनुसार जीवन जी रहे थे, यहूदी मिशनरियों या प्रवर्तकों ने यहूदीवाद और अन्यजाति संसार में व्याप्त खाई को पाटने का प्रयास किया था।

अब जब ये यहूदी अन्यजातियों के पास पहुँचे, तो उन्होंने दो मार्गो को लिया जिनका अनुसरण उनके पश्चात् मसीहियों ने किया। एक तरफ तो अधिकांश यहूदियों ने अपने विश्वास को यूनानी विचाराधारा से इतना ज्यादा रंग लिया कि वे मिश्रित अर्थात् दो धर्मों की मिली जुली शिक्षा में पड़ गए। उन्होंने अनुचित रीति से पुराने नियम के विश्वास को मूर्तिपूजक मान्यताओं और प्रथाओं के साथ मिला दिया। इस तरह के मिश्रितवाद के सबसे उत्तम ज्ञात उदाहरणों में से एक सिकन्दरिया के फिलो के लेख में मिलता है जो कि 30 ईसा पूर्व से लेकर 50 ईस्वी तक रहा। फिलो ने पुराने नियम के विश्वास और अन्यजातिय बौद्धिक संस्कृति के मध्य की भिन्नता को मूसा की पुस्तक को रूपक के रूप में मानते हुए और ये तर्क देते हुए कम करने की कोशिश की कि यहूदी विश्वास सम्मानजनक था क्योंकि यह यूनानी दर्शनशास्त्र के साथ सामंजस्य में था।

इसके साथ-साथ अनेक यहूदियों ने इन सदियों के दौरान बाइबल आधारित विश्वास के साथ बिना कोई गंभीर समझौता किए यूनानी संस्कृति में वैधानिक रूप से सेवकाई करने के तरीकों को खोज लिया था। इस तरह की सेवकाई के सबसे बड़े उदाहरणों में से एक सेप्तुआजिन्त अर्थात्, पुराने नियम के यूनानी अनुवाद की रचना थी। पुराने नियम का यूनानी अनुवाद संपूर्ण भूमध्यसागरीय संसार के यहूदी आराधनालयों में किया गया था ताकि वे यहूदी और अन्यजाति जो इब्रानी को समझने में असमर्थ थे पवित्रशास्त्र का उपयोग कर सकें।

धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य मसीही विश्वासी धर्मविज्ञानी भी इन दो दिशाओं की ओर ही कार्यरत् हुए। एक तरफ तो कई कलीसियाई अगुवे मसीही मिश्रितवाद में गिर गए क्योंकि वे अपने प्रयासों में नए नियम के विश्वास को यूनानी विचारधारा वाले बनाने में बहुत दूर तक चले गए। उन्होंने सच्ची मसीहियत को मूर्तिपूजक आस्थाओं और प्रथाओं के साथ मिश्रित कर दिया। नए नियम की कलीसिया में कई तरह के मिश्रितवाद पहले से ही उठ खड़े हुए थे, परंतु धर्माध्यक्षीय अवधि के दौरान कई जाने-पहचाने अप्रामाणिक सम्प्रदाय जैसे ईबियोनिज्म बासिलीडीज्म और नोस्टीसिज्म मसीहियत में विकसित हुए। दूसरी तरफ, जबकि कट्टरवादीय मसीही धर्मविज्ञानियों ने मिश्रितवाद का विरोध किया, और उन्हें अपने चारों के यूनानी विचारधारा वाले दृष्टिकोणों के साथ पारस्परिक व्यवहार करते हुए मूर्तिपूजक संसार में वैधानिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रूप से सेवकाई करने के तरीके मिले। जब इन सच्चे विश्वासियों ने मसीह के आदेश को सभी जातियों तक पहुँचाने के लिए ले लिया तो उन्होंने अपने धर्मविज्ञान को समकालीन दर्शनशास्त्र और धार्मिक दृष्टिकोणों के संदर्भ में बाइबल आधारित सत्यों के साथ बिना कोई समझौता किए व्यक्त किया।

इन सांस्कृतिक परिवर्तनों को अपने ध्यान में रखते हुए, हमें कुछ उन तरीकों को देखना चाहिए जिसमें अधिकारिक मसीही धर्मविज्ञान ने धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य अन्यजाति संसार में सेवकाई की चुनौतियों का सामना किया। वे कौन सी सामान्य धर्मवैज्ञानिक प्रवृतियाँ है जो कि मसीही धर्मविज्ञान में उस समय की अवस्था में प्रकट हुईं?

धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन

धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य, भूमध्यसागरीय संसार में प्रमुख दार्शनिक और धार्मिक विचारधारा एक ऐसा सामान्य दृष्टिकोण था जिसे नीओ-प्लेटोवाद के नाम से जाना जाता था। शब्दावली "नीओ-प्लेटोवाद " दृष्टिकोणों के एक बहुत बड़े समूह, और एक विस्तृत धार्मिक दर्शनशास्त्र को प्रस्तुत करती है। इसे नीओ-प्लेटोवाद इसलिए पुकारा जाता है क्योंकि यह प्लेटो की शिक्षाओं में निहित था, परंतु साथ ही इसमें नए विचारों को सम्मिलित किया गया था जिन्हें दार्शनिक जैसे प्लेटीनुस जो कि 203 से 279 ईस्वी तक रहा, के द्वारा परिचित कराया गया था।

यद्यपि यह धार्मिक दर्शनशास्त्र जटिल था, हम इसके केन्द्रीय विषयों को तीन रूपों : द्वैतवाद, बुद्धिवाद और रहस्यवाद के संदर्भ में सारगर्भित कर सकते हैं।

सर्वप्रथम, नीओ-प्लेटोवाद द्वैतवादी था। इसने आत्मिक और भौतिक लोकों के मध्य एक मूलभूत विपरीतता की शिक्षा दी। नीओ-प्लेटोवादी द्वैतवाद में शुद्ध आत्मा को अच्छा माना जाता था और शुद्ध पदार्थ को बुरा माना जाता था। यद्यपि स्वयं परमेश्वर को दोनों लोकों अर्थात् आत्मिक और भौतिक से ऊपर माना जाता था, फिर भी अपनी भलाई में परमेश्वर ने अपनी दिव्य बुद्धि, ज्योति या वचन को आत्मिक और भौतिक संसारों में फैलाया। यह दिव्य शक्ति परमेश्वर से निकलती है और पूरी वास्तविकता में बहती हुई, व्यवस्था और ढाँचे की मात्रा को, पहले आत्मिक लोक से आरंभ करते हुए और इसके पश्चात् नीचे की ओर भौतिक संसार में आती चली जाती है।

इस द्वैतवादी दृष्टिकोण के कुछ निश्चित उपयोग उन अर्थों पर आधारित थे जिनमें मनुष्यों को अपना जीवन जीना था। लोगों के लिए कहा जाता था कि वे भौतिक संसार में जन्म लेते हैं, यहाँ तक कि शारीरिक लोक के कारावास में हैं। परंतु नीओ-प्लेटोवाद ने शिक्षा दी कि इस भौतिक संसार के साथ सारे संबंधों को दूर करने के द्वारा मानव जीवन के लिए सबसे सर्वोत्तम भली बात परमेश्वर की खोज करना है।

परमेश्वर की खोज में इस भौतिक संसार से सारे तरह के संबंधों को तोड़ने की यह धारणा हमें नीओ-प्लेटोवाद की दूसरी मुख्य बात बुद्धिवाद या विवेकवाद की ओर ले आती है।

जब लोगों ने भौतिक संसार के अपने कारावास पर जय पाने की कोशिश की तो उन्हें मानवीय तर्कशक्ति पर ध्यान केन्द्रित करना आरंभ करना था, अर्थात् हमारे भीतर की आत्मिक और बौद्धिक क्षमता पर। इसलिए सावधानी से किये गए तर्क और आत्मबोध के द्वारा लोग स्वयं को उलझाने वाली बुरी बातों से दूर रखने का प्रयास भी कर सके।

जितना महत्वपूर्ण विवेकपूर्ण मनन था, यह सच्चे धार्मिक व्यक्ति के लिए आरंभ ही था। नीओ-प्लेटोवाद ने मनुष्य को तर्कशक्ति से परे जाने के लिए बुलाहट दे कर रहस्यवाद में जाने को कहा। संसार से पूरी तरह अलग होने के लिए और परमेश्वर के साथ पूर्ण रूप से एक होने के लिए, लोगों को उनके स्वयं की बौद्धिक शक्तियों से परे जाना था और स्वयं परमेश्वर की ऊचाँइयों तक पहुँचना था।

क्योंकि नीओ-प्लेटोवाद यह विश्वास मानता था कि परमेश्वर सबसे परे, यहाँ तक कि मनुष्य की तर्कशक्ति से परे सर्वश्रेष्ठ है, सबसे अंत में मनुष्य परमेश्वर के साथ केवल तब ही एक हो सकता है जब वह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रहस्यमयी प्रकाशन को प्राप्त करता है जो कि केवल मनुष्य के आत्मबोधों से बहुत परे की बात है। यह आत्मिक आनन्द दिव्य प्रकाश की प्रेरणा और पूरी सृष्टि में निकलते हुए शब्द के द्वारा आने वाली थी। और इसका परिणाम होना था परमेश्वर के साथ एकता, परम सुख और मनुष्य के गंतव्य की सबसे बड़ी पूर्णता।

ये दार्शनिक और धार्मिक विचारधाराएँ भूमध्यसागरीय संसार में धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य इतनी ज्यादा प्रचलित थीं कि विश्वासयोग्य मसीही धर्मविज्ञानी इनसे व्यवहार किए बिना न रह सके। सच्चाई तो यह है कि उनके कई धर्मवैज्ञानिक विचार-विमर्श नीओ-प्लेटोवादी धारणाओं के संदर्भ में रचे गए।

इनमें से बहुत से प्रयास पर्याप्त मात्रा में वैध हैं। उदाहरण के लिए, आरंभिक कलीसिया की बड़ी सार्वभौमिक महासभाएँ जैसे कांस्टेन्टिनोपल और चाल्सीदोन की महासभाओं ने नीओ-प्लेटोवादी दृष्टिकोणों के साथ बाइबल आधारित मान्यताओं को व्यक्त किया है। जाने-पहचाने अग्रणी मसीही धर्मविज्ञानी जैसे सिकन्दरिया का क्लेमेन्ट, ओरेगन और यहाँ तक कि अगस्तीन ने भी मूलरूप से स्वयं को उन संदर्भों में व्यक्त किया जो कि नीओ-प्लेटोवादियों से परिचित थे।

धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य विश्वासयोग्य मसीही धर्मविज्ञानियों ने अपने ध्यान को नीओ-प्लेटोवाद पर सच्चे सुसमाचार के प्रति अपनी मूलभूत प्रतिबद्धताओं से परिवर्तित करने के लिए केन्द्रित नहीं किया था। वे बड़ी शक्ति के साथ बाइबल आधारित सत्यों को थामे रहे। परंतु नीओ-प्लेटोवाद के प्रति उनकी जागरूकता ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या उन तरीकों में करने के लिए कोई सहायता नहीं की जिसमें वे और उनके समकालीन समझ सकते थे। और इन तरीकों से उनकी संस्कृति के साथ वार्तालाप करने के द्वारा, उन्होंने सुसमाचार का विस्तार और कलीसिया का निर्माण किया, और बहुत से अविश्वासियों को मसीह के बचाने वाले ज्ञान के पास ले आए।

कई तरीके हैं जिनमें हम धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान पर नीओ-प्लेटोवाद के पड़े प्रभाव को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं। परंतु हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की तीन विशेषताओं की ओर संकेत करेंगे जो कि नीओ-प्लेटोवाद के हमारे सार के समानान्तर हैं: धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की आत्मिक प्राथमिकताएँ, तर्कशक्ति की महत्वपूर्णता, और रहस्यवाद की महत्वपूर्णता। आइए सबसे पहले धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं पर ध्यान केन्द्रित करें जो कि नीओ-प्लेटोवाद के द्वारा प्रभावित हुई थीं।

प्राथमिकताएँ। आपको याद होगा कि नीओ-प्लेटोवाद की एक विशेषता आत्मिक और भौतिक लोकों के मध्य द्वैतवाद की थी। धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान ने इस द्वैतवाद के प्रति प्रतिक्रिया बाइबल की शिक्षाओं को संगठित और प्रस्तुत करते हुए एक ऐसे तरीके में रखते हुए व्यक्त की जिसने रोजाना की सांसारिक बातों की अपेक्षा आत्मिकता को प्राथमिकता दी, जो कि धर्मविज्ञान के लिए एक ऐसा दृष्टिकोण ठहरा जिसे हम "ऊपर से आया हुआ धर्मविज्ञान" कहेंगे। एक शब्द में, ऊपर से आया हुआ धर्मविज्ञान ऐसा धर्मविज्ञान है जो कि नीचे के आत्मबोध, ज्यादा सांसारिक विषयों की अपेक्षा उच्च आत्मिक आत्मबोध – परमेश्वर पर ध्यान से प्राप्त आत्मबोध और इसके मार्गों को प्रथम स्थान देता है: अर्थात् "परमेश्वर का क्या सार तत्व है?" "उसकी क्या विशेषताएँ हैं?" "परमेश्वर की एकता क्या है?" "त्रिएकता क्या है?" ये धारणाएँ धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान में उस आत्मबोध की अपेक्षा बहुत ज्यादा विशेष थी जो कि इस भौतिक संसार में मनुष्य के जीवन और परिस्थिति के साथ था। ये प्राथमिकताएँ धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की पहचान बन गई।

दूसरे स्थान पर, मसीही धर्मविज्ञानियों ने धर्मविज्ञान में तर्कशक्ति की महत्वपूर्णता को, धर्मविज्ञान में एक प्राथमिक औजार के रूप में उपयोग करते हुए तार्किक आत्मबोध पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बहुत अधिक प्रशंसा को प्राप्त किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तर्कशक्ति। जैसा कि हमने देखा लिया है, नीओ-प्लेटोवाद का एक मुख्य गुण वह धारणा थी जिसमें मनुष्य का दायित्व मानवीय तर्कशक्ति का उपयोग कर इस भौतिक संसार से ऊपर उठना था। नीओ-प्लेटोवाद के द्वारा बौद्धिक आत्मबोध पर दिए हुए बल के प्रति प्रतिक्रिया में, कलीसिया के आरंभिक धर्माध्यक्षों ने मसीही धर्मविज्ञान में बौद्धिक आत्मबोध पर जोर देना आरंभ किया। अग्रणी मसीही धर्मविज्ञानियों ने अपने ध्यान को और भी ज्यादा मसीही मान्यताओं की व्याख्या और तर्कसंगत जांच के लिए सावधानी से उपयोग किया, जिसके कारण नए नियम के बहुत से धर्मसिद्धांत जिन्हें अनिर्दिष्ट और छानबीनरहित छोड़ दिया गया था तर्कसंगत आत्मबोध के विषय बन गए।

उदाहरण के लिए, नए नियम के धर्मविज्ञान ने त्रिएकता जैसे धर्मसिद्धांतों को व्यापक रूप से अस्पष्ट ही रहने दिया; नए नियम के लेखकों ने त्रिएकता के व्यक्तित्वों के मध्य के संबंधों के किसी विवरण को संबोधित नहीं किया है। परंतु, धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान में, धर्मविज्ञानियों ने तर्कसंगत विश्लेषण का उपयोग यह स्पष्ट करने के लिए किया कि नए नियम के लेखक त्रिएकता के बारे में क्या विश्वास करते थे, यद्यपि बाइबल के लेखकों ने अपने दृष्टिकोणों का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया है।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में परमेश्वर के बारे में उठी झूठी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया में, आरंभिक कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने स्वयं को तर्कसंगत आत्मबोध के द्वारा सावधानी से की गई भिन्नताओं के लिए समर्पित करते हुए, जितना ज्यादा सम्भव हो सकता था, उन सभी बातों पर कार्य किया जिन्हें नए नियम में छोड़ दिया गया था। इस तरीके से धर्मविज्ञान के लिए तर्कशक्ति का उपयोग धर्मविज्ञानियों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुण बन गया जब उन्होंने उनके नीओ-प्लेटोवादी संसार में सेवकाई की।

तीसरे स्थान पर, धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान ने नीओ-प्लेटोवाद के द्वारा रहस्यवाद पर दिए जोर की प्रतिक्रिया में रहस्यवाद या भावातीत आत्मिक जागृति पर भी ध्यान केन्द्रित किया।

रहस्यवाद। जैसा कि हमने देखा था, नीओ-प्लेटोवाद में मनुष्य के मन पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा सावधानी से किया गया तर्क परमेश्वर के साथ उच्च, रहस्यात्मक स्तर की एकता के लिए मात्र आगे की ओर बढ़ाया गया एक कदम है। तर्क सीमित था और उच्च आत्मिक वास्तविकताओं को समझ नहीं सकता है और इन उच्च स्तरों तक पहुँचने के लिए विशेष प्रकाश की आवश्यकता होती है।

इसी तरह से जब आरंभिक कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने त्रिएकता, या मसीह के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व, या कलीसिया और संस्कार जैसे धर्मसिद्धांतों को समझाया तो उन्होंने अक्सर यह अंगीकार किया कि इन धर्मसिद्धांतों के कुछ तत्व मानवीय तर्कशक्ति से परे की बात थी। निरंतर उनके तर्कसंगत विचार विमर्श इस स्वीकारोक्ति के साथ जुड़े हुए थे कि मसीही विश्वास के उच्च सत्य बस यों ही व्याख्या या तर्कसंगत रूप से इनका खण्डन नहीं किया जा सकता है। इसकी अपेक्षा, उन्हें मात्र रहस्यमयी आत्मबोध के द्वारा, अलौकिक अनुभवों के द्वारा ही जाना जा सकता है जो कि मनुष्य की तार्किक शक्ति की पहुँच से बहुत ही ऊँचे हैं। धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान ने परमेश्वर के प्रकाशन की सेवा में तर्कशक्ति का उपयोग किया, परंतु इसने अधिकत्तर शिक्षा तार्किक प्रमाणों की अपेक्षा आत्मिक अंतर्ज्ञान से पाई।

इसी प्रकार धर्माध्यक्षीय अवधि के धर्मविज्ञानियों ने उनके अन्यजाति संसार में मसीही धर्मविज्ञान की शिक्षा देने, उसे खोजने और उसका बचाव करने की चुनौतियों का सामना किया, तो उनकी रणनीतियों और प्रबलताओं में परिवर्तन आया। भौतिकता से आत्मिकता की ओर उनकी प्राथमिकता, या ऊपर से आया हुआ धर्मविज्ञान, तर्कसंगत विश्लेषण का उपयोग और रहस्यवाद पर निर्भरता के इन परिवर्तनों ने कलीसिया के लिए मार्ग को निर्धारित कर दिया जिसने अंतत: उस ओर मार्गदर्शन किया जिसे हम आज के दिनों में विधिवत धर्मविज्ञान के रूप में जानते हैं।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे धर्मविज्ञानियों ने मसीही धर्मविज्ञान को उनकी यूनानी विचारधारा वाली संस्कृति में धर्माध्यक्षीय अवधि में समझाना आरंभ किया, हमें अब मध्यकालीन धर्मविज्ञान की ओर मुड़ना चाहिए, जब मसीही विश्वासी और ज्यादा निर्विरोध तरीके से मानवीय

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तार्किकता और तर्क के यूनानी विचारधारा वाले दृष्टिकोणों को मसीही धर्मविज्ञान पर लागू करने लगे। हमारा ध्यान एक धर्मवैज्ञानिक आन्दोलन की ओर होगा जिसे अक्सर विद्वतावाद कह कर पुकारा जाता है जो कि लगभग 600 ईस्वी से लेकर 1500 ईस्वी के मध्य में विकसित हुआ।

मध्य-कालीन धर्मविज्ञान

विद्वतावाद के प्रति हमारी छानबीन वैसी ही होगी जिसमें हमने धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान को देखा। एक ओर तो हम उन सांस्कृतिक परिवर्तनों को देखेंगे जिसने विद्वतावाद को जन्म दिया। और दूसरी ओर, हम इसके फलस्वरूप आए कुछ धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों की खोज करेंगे। आइए उन सांस्कृतिक परिवर्तनों के बारे में सबसे पहले देखें जो कि इन सदियों के मध्य घटित हुए हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन

आरंभ करने के लिए, हमें पहले इस शब्द "विद्वतावाद " के अर्थ की ओर संकेत करना चाहिए जो कि आरंभिक मध्यकालीन यूरोप में उच्च शिक्षा के विद्यालयों से आता है। उन विद्यालयों में व्याख्यान् द्वन्द्वात्मक पद्धति पर आधारित होते थे, जिसे सामान्य रूप से आधुनिक युग में "तर्क" के नाम से पुकारा जाता है, जो कि लैटिन शब्द स्कोलॉस्टिकस के नाम से जाना जाता है। विस्तृत रूप से, ये व्याख्यान् अरस्तू के तर्क के सिद्धांत पर निर्भर होकर सिखाए जाते थे। फलस्वरूप शब्द "विद्वतावाद " का उपयोग दर्शनशास्त्र और धर्मविज्ञान पर लागू हो गया जो कि अधिकत्तर अरस्तू के दर्शनशास्त्र में दिए हुए तर्क के सिद्धांतों पर निर्भर है।

मध्ययुगीन दर्शन पद्धति के फलस्वरूप एक बहुत ही महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन मध्यकालीन युग में घटित हुआ। यह परिवर्तन तब घटित हुआ जब भूमध्यसागरीय संसार के बौद्धिक समाज नीओ-प्लेटोवाद से दूर हो गए और अरस्तू के दर्शनशास्त्र की ओर मुड़ गए। और इस परिवर्तन के फलस्वरूप, अग्रणी मसीहियों को तो उन तरीकों को ग्रहण करना था जिनमें उन्होंने मसीही धर्मसिद्धांतों की व्याख्या और उसका बचाव अरस्तू आधारित दर्शनशास्त्र के विरूद्ध किया।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि विद्वतावाद की ओर इस परिवर्तन ने हजारों वर्षों का समय लिया, और वहाँ पर इसके प्रति बहुत अधिक विरोध था, विशेषकर मसीही रहस्यवादियों की ओर से। परंतु अल्बर्ट मोगनस या "अल्बर्ट महान" के समय के आने तक, जो कि लगभग 1206 से लेकर 1280 के आसपास रहा, और जो थॉमस अक्विनॉस, जो कि लगभग 1225 से लेकर 1274 के आसपास रहा, का जाना-पहचाना शिष्य था, विद्वतावाद ने मसीही धर्मविज्ञान को प्रस्तुत किया। धर्मसुधार के ठीक पहले मसीही धर्मविज्ञान की मुख्य धारा गहनता से अरस्तू आधारित दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोणों के अनुरूप थी।

अब क्योंकि हमने ऐसे कुछ सांस्कृतिक परिवर्तनों को देख लिया है जिसने विद्वतावाद को जन्म दिया, हमें अब इसकी कुछ मूलभूत विशेषताओं की ओर मुड़ना चाहिए। मसीही धर्मविज्ञान में विद्वतावाद को मुख्य दृष्टिकोण के रूप में किस बात ने चिन्हित किया।

धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन

यद्यपि धर्माध्यक्षीय और विद्वतावाद के धर्मविज्ञान के मध्य कई समानताएँ हैं, परंतु इनमें कम से कम एक बहुत ही महत्वपूर्ण भिन्नता है। धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान अपने पूरे रूप में इस बात को थामे रखता है कि सर्वोत्तम धर्मवैज्ञानिक अंतर्दृष्टियाँ रहस्यवादी प्रेरणाओं के माध्यम से आती हैं। परंतु विद्वतावाद बहुत ही उच्च तर्कसंगत था, यह पूरे धर्मविज्ञान के मण्डन, व्याख्या, और खोज के लिए तर्क के मूल्य पर जोर देता है। भौतिक और आत्मिक संसार, और यहाँ तक कि स्वयं परमेश्वर, का विश्लेषण भी तर्क की सावधानी से किया जाना चाहिए था।

विद्वतावाद के शिक्षक अरस्तू के तर्क, तत्वमीमांसा, और भौतिकी पर लिखे हुए लेखों से अच्छी तरह पारंगत थे, और उन्होंने मसीही धर्मविज्ञान के प्रस्तुतीकरण को इस तर्कसंगत दृष्टिकोण के साथ समायोजित करना चाहा। और इसी कारण विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञान को समझने के लिए हमें तर्क पर अरस्तू के दृष्टिकोणों की कुछ समझ होनी आवश्यक है।

समय हमें केवल इतनी ही अनुमति देता है कि हम तर्क पर अरस्तू के दृष्टिकोणों के चार पहलुओं का उल्लेख करें जिन्होंने विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञान को प्रभावित किया : पहला सटीक शब्दावली की महत्वपूर्णता; दूसरा, साध्यात्मक तर्क या तर्क-वाक्य की आवश्यकता; तीसरा, तर्कसंगत न्यायबद्धता का मूल्य; और अंत में, तर्कसंगत विश्लेषण की प्राथमिकता।

शब्दावली। पहला, अरस्तू ने समझ लिया था कि तर्कसंगत, तार्किक आत्मबोध की सफलता हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों और कैसे हम इन्हें परिभाषित करते हैं, पर निर्भर करती है।

अब, नीओ-प्लेटोवादी और धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञानियों के लिए परिभाषाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण थीं। परंतु अरस्तू इन विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने के अपने तरीके में बहुत अधिक ठोस था जिसमें उसने इनसे व्यवहार किया। भौतिक और तत्वमीमांसा पर अपने दृष्टिकोणों पर आधारित होकर, उसने तार्किक रूप से, यहाँ तक कि आरंभिक वैज्ञानिक तरीकों को वर्गीकृत करते हुए किसी एक वस्तु के इसके घटित होने के या इसके अनावश्यक गुणों के सार या तत्व को किसी भी विचाराधीन वस्तु को बाकी की अन्य वस्तुओं से भिन्न करते हुए परिभाषित करते हुए वर्णित किया है।

कुछ इसी तरह, अपनी अरस्तू आधारित संस्कृति में स्पष्ट संप्रेषण के लिए, विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने भी धर्मवैज्ञानिक शब्दावलियों को जितना ज्यादा सम्भव हो सटीक रूप में परिभाषित किया है।

इस बात को दिखाने के लिए कि कैसे विद्वतावादियों ने अपने धर्मविज्ञान को अरस्तू के द्वारा जोर दी गई सटीक शब्दावली के साथ समायोजित किया, आइए, हम थॉमस अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका नामक पुस्तक में से देखें। वह अध्याय जिसका शीर्षक "क्या परमेश्वर असीमित है?" में अक्विनॉस ने निम्नलिखित आपत्ति का उल्लेख और उत्तर दिया है:

> **आपत्ति 1. ऐसा जान पड़ता है कि परमेश्वर असीमित नहीं है। इसका कारण सब कुछ जो असीमित है वह अपूर्ण है...क्योंकि इसके कई भाग और विषय हैं...परंतु परमेश्वर सबसे ज्यादा पूर्ण है; इसलिए वह असीमित नहीं है।**

इस आपत्ति के उत्तर में, अक्विनॉस ने परिभाषा के विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया है। सुनिए उसने इसका उत्तर कैसे दिया :

> **अब विषय उसके आकार के कारण पूर्ण होता है जिसके द्वारा इसे सीमित बनाया गया है; इसलिए जैसा कि विषय को असीमित ठहराया गया है, इसमें अपूर्णता की कुछ प्रकृति है; क्योंकि यह ऐसा है कि जैसा यह बेडौल विषय था।**

ध्यान दें कैसे अक्विनॉस ने इस छोटे से प्रसंग में कई तकनीकी शब्दों का उपयोग किया है। उसने ऐसे शब्दों का जैसे "विषय," "आकार," "बेडौल," "सीमित," "असीमित," "पूर्ण" और "अपूर्ण" शब्दों का उपयोग किया है। और उसने इन शब्दों का उपयोग इस तरीके से किया जिन्हें उसके दिनों में समझा जा सकता था क्योंकि वे अरस्तू के द्वारा उपयोग की गई शब्दावलियों के सदृश थे। फलस्वरूप, अक्विनॉस अपने दृष्टिकोणों और अन्यों के दृष्टिकोणों के मध्य उत्तम भिन्नता को दर्शाने के लिए सक्षम हो गया। सटीक शब्दावली वाली परिभाषाओं का ध्यान विद्वतावाद की विशेषता था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस ध्यान के फलस्वरूप विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञान तकनीकी शब्दों के साथ भरा पड़ा है। विद्वतावादियों ने मसीही धर्मविज्ञान के लिए व्यापक विशिष्ठ शब्दावली का विकास किया। और यह हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि उनकी बहुत सी शब्दावलियाँ निरंतर मसीही धर्मविज्ञान में सदियों से उपयोग की जा रही हैं।

विद्वतावाद के मसीही धर्मविज्ञानियों को सटीक शब्दावलियों पर जोर देने के लिए प्रेरित करने के साथ ही, अरस्तू के तर्क पर किए हुए कार्य ने उन्हें धर्मवैज्ञानिक सत्यों को संप्रेषित करने के लिए तर्क-वाक्यों को केन्द्रीय भूमिका प्रदान करने की प्रेरणा दी।

तर्क-वाक्य। अपने सबसे सरलतम रूपों में, तर्क-वाक्य वे कथन हैं जो कि किसी विषय से निर्मित हुए हैं और जिनमें कोई एक गुण या लक्षण है। हम अपने प्रतिदिन के वार्तालाप में हर समय तर्क-वाक्यों का उपयोग करते हैं। इस वाक्य पर ध्यान दें कि, "मैं एक व्यक्ति हूँ।" इस तर्क-वाक्य में "मैं" विषय है और "एक व्यक्ति हूँ," उसका गुण है। और हम सभी धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों से परिचित हैं, जैसे कि "यीशु परमेश्वर का पुत्र है।" इस तरह की सच्चाई के तर्क-वाक्य वाले कथन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों के लिए आवश्यक थे क्योंकि इन्हें अरस्तू के तर्क के विश्लेषण पर निर्मित किया गया था।

अरस्तू ने अपने ध्यान को सबसे ज्यादा इस बात पर लगाया कि कैसे तर्कसंगत विवेक तर्क-वाक्यों के साथ कार्य करता है। उसके दृष्टिकोण में, तर्क अंतर्ज्ञान या भावनाओं, कविता या प्रतीकवाद, पहेलियों या प्रार्थनाओं के भावों के साथ कार्य नहीं करता है। तर्क का लेन देन प्राथमिक रूप से तथ्य के कथनों के साथ होता है। केवल उचित रूप से निर्मित तर्क-वाक्य के साथ हम एक विषय का विश्लेषण करने के लिए तर्क का उपयोग कर सकते हैं।

अरस्तू के द्वारा इसपर दिए हुए महत्व के साथ कार्य करते हुए, विद्वतावाद ने बड़ी मेहनत के साथ इसके औपचारिक धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों को व्यक्त किया। अब, थोड़े कम औपचारिक स्तर पर, थोड़े कम शैक्षणिक स्तर पर, विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञानियों ने समझ लिया था कि मसीही विश्वास में अन्य प्रकार के भावों को सम्मिलित किया जाना चाहिए था। बहुत से विद्वतावाद आधारित धर्मवैज्ञानिक धार्मिक थे और उन्होंने अपनी धार्मिक प्रतिबद्धता को कविताओं, भजनों, प्रार्थनाओं और ऐसी ही अन्य बातों के द्वारा व्यक्त किया। परंतु जटिल, शैक्षणिक संदर्भ में धर्मवैज्ञानिक मान्यताएँ सावधानी के साथ निर्मित तर्क-वाक्यों, अर्थात् तथ्यों के कथनों में प्रस्तुत हैं।

विद्वतावादी धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों की केन्द्रीयता को दिखाने के लिए हमें एक बार फिर से अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका नामक पुस्तक की ओर मुड़ना होगा। उसके विचार विमर्श को "क्या परमेश्वर का ज्ञान स्व-स्पष्ट है?" नामक शीर्षक से दिए हुए अध्याय में से सुनें :

> **आपत्ति 1. ऐसा जान पड़ता है कि परमेश्वर का अस्तित्व स्व-स्पष्ट है। अब हमें कही गई वे स्व-स्पष्ट बातें जिनका ज्ञान स्वाभाविक रूप से हममें प्रत्यारोपित किया गया है, जिन्हें हम प्रथम सिद्धांतों के संबंध में देख सकते हैं। परंतु जैसा कि डमासेन कहते हैं (आठवीं शताब्दी के जॉन डमासेन का उल्लेख) कि "परमेश्वर का ज्ञान स्वाभाविक रूप से हम सब में प्रत्यारोपित किया गया है।" इसलिए परमेश्वर का अस्तित्व स्व-स्पष्ट है।**

अक्विनॉस ने इस आपत्ति का उत्तर इस तरह से दिया:

> **कोई भी मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करेगा जो स्व-स्पष्ट है के विपरीत है; जैसा कि दार्शनिक (अरस्तू की ओर संकेत) प्रदर्शन के प्रथम सिद्धांतों के संबंध में कहता है। परंतु "परमेश्वर है" के तर्क-वाक्य का उलटा कोई भी मानसिक रूप से**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> स्वीकार कर सकता है: "मूढ़ ने अपने मन में कहा कि,'कोई परमेश्वर है ही नहीं।'" (भजन संहिता 53:1)। इसलिए परमेश्वर अस्तित्व में है स्व-स्पष्ट नहीं है।

जैसा कि हम अपेक्षा करते हैं कि, इस प्रसंग का संकेत अरस्तू के क्या स्वयं-स्पष्ट है, के तकनीकी अर्थ के एक विचार की ओर है कि " कोई भी मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करेगा जो स्व-स्पष्ट है के विपरीत है।" परंतु इससे परे, हम देखते हैं कि अक्विनॉस ने उसके विरूद्ध आपत्ति करने वालों को तर्क-वाक्य का उपयोग करते हुए उत्तर दिया है। वह किसी प्रशंसा में या विलाप में नहीं आ गया। उसने अपने विरोधी को डाँटा या धमकी नहीं दी। इसकी अपेक्षा, वह निरंतर उसको तर्क-वाक्यों के साथ उत्तर देता चला गया।

हम जो यहाँ अक्विनॉस में देखते हैं वह सामान्य रूप से मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञान की विशेषता थी। मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने अपनी औपचारिक धर्मवैज्ञानिक विचार विमर्शों को लगभग पूरी तरह तर्क-वाक्यों तक ही सीमित रखा था। उन्होंने तर्कशक्ति के द्वारा धर्मवैज्ञानिक विषयों को सावधानी से परिभाषित किए हुए तथ्य आधारित कथनों पर अच्छी तरह निर्मित शब्दावलियों के द्वारा समझाया। यह विशेषता औपचारिक मसीही धर्मविज्ञान के लिए इतनी ज्यादा केन्द्रीय बन गई कि यहाँ तक हमारे आज के दिनों में भी तर्क-वाक्य विधिवत धर्मविज्ञान के लिए महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

विद्वतावाद ने अरस्तू के तर्कों पर दिए हुए आत्मबोधों के साथ जिस तीसरे तरीके के व्यवहार किया को तर्कसंगत न्यायबद्धता की श्रेणी में सारगर्भित किया जा सकता है।

न्यायबद्धताएँ। एक शब्द में, एक न्यायबद्धता एक ऐसा तर्कसंगत तर्क है जिसमें तर्क-वाक्यों को प्रमाणों और निष्कर्षों की रचना करने के लिए व्यवस्थित किया जाता है।

उदाहरण के द्वारा, एक चिर-परिचित न्यायबद्धता को अक्सर प्राथमिक कक्षा की तर्क आधारित पाठ्य पुस्तकों में सिखाया जाता है जो कुछ इस प्रकार होता है: प्रमाण 1 : सुकरात एक व्यक्ति है। प्रमाण 2 : सभी मनुष्य नश्वर हैं। निष्कर्ष: फलस्वरूप, सुकरात एक नश्वर व्यक्ति है।

अरस्तू ने अपने बहुत अधिक समय को इस बात की पहचान लगाने में खर्च कर दिया कि कैसे तर्क-वाक्यों का उपयोग ऐसे तर्कों में किया जा सकता है जो कि निश्चित प्रकार के निष्कर्षों की ओर ले चले। उसने जैसे पहचान का नियम है, जैसे गैर-विरोधाभास का नियम है, और बहिष्कृत मध्य का नियम है, और साथ ही अनुमान के विभिन्न प्रकार के नियम अर्थात्, वह तरीका जिसमें हम सही या तार्किक रूप से विभिन्न प्रकार के प्रमाणों से विभिन्न प्रकार के निष्कर्षों का अनुमान लगाते हैं, की तरह ही तथाकथित "तर्क के नियमों" की खोज की।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि वास्तविक धर्मवैज्ञानिक तर्क अक्सर बहुत पेचीदा होते हैं, परंतु विद्वतावादी धर्मवैज्ञानिक ऐसे धर्मवैज्ञानिक तर्कों के निर्माण की मंशा रखते थे जो कि अरस्तू के तर्क सिद्धांतों की पुष्टि करते थे।

एक बार फिर से अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका के "क्या परमेश्वर का ज्ञान स्व-स्पष्ट है?" के विचार विमर्श पर ध्यान दें। वहाँ पर उसने इस प्रस्ताव का उत्तर दिया है कि परमेश्वर का ज्ञान एक परोक्ष न्यायबद्धता के साथ स्वयं-स्पष्ट है। उसने इन शब्दों को लिखा है :

> कोई भी मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करेगा जो स्व-स्पष्ट है के विपरीत है... परंतु "परमेश्वर है" के तर्क-वाक्य का विपरीत कोई भी मानसिक रूप से स्वीकार कर सकता है: "मूढ़ ने अपने मन में कहा कि,'कोई परमेश्वर है ही नहीं।'" (भजन संहिता 53:1)। इसलिए परमेश्वर अस्तित्व में है स्व-स्पष्ट नहीं है।

यहाँ प्रस्तुत न्यायबद्धता को इस तरीके से भी व्यक्त किया जा सकता है। प्रमाण एक : कोई भी मानसिक रूप से जो स्वयं-स्पष्ट है, के विरूद्ध बात को स्वीकार नहीं करेगा। प्रमाण दो: "परमेश्वर है" के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तर्क-वाक्य के विपरीत कोई भी मानसिक रूप से स्वीकार कर सकता है। निष्कर्ष: अतः परमेश्वर का अस्तित्व है यह अपने आप में स्पष्ट नहीं है।

यह अनुच्छेद केवल एक उदाहरणमात्र है कि कैसे अक्विनॉस ने अपने धर्मवैज्ञानिक आधार को सावधानी से निर्मित तर्क-वाक्य के साथ खोजा और इसका मण्डन किया। और इस विषय के लिए उसका निपटारा मध्यकालीन विद्वतावाद की विशेषता के साथ था। सच्चाई तो यह है कि, तर्क-वाक्य पर इस तरह का ध्यानाकर्षण हमारे आज के दिनों में यहाँ तक कि विधिवत धर्मविज्ञान में भी वैसे ही एक केन्द्रीय गुण के रूप में बना हुआ है।

तकनीकी शब्दों पर ध्यान केन्द्रित करने के अतिरिक्त, तर्क-वाक्य और तर्कसंगत न्यायबद्धता पर निर्भरता, मध्यकालीन विद्वतावादियों ने अरस्तु के प्रभाव को उनके धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं में भी प्रदर्शित किया है।

प्राथमिकताएँ। अरस्तू ने तर्क का उपयोग वास्तविकता का विश्लेषण एक गतिहीन, तर्कसंगत, पदानुक्रम के संदर्भ में कार्य करने के लिए किया है। उसने प्रत्येक वस्तु पर एक ऊर्ध्वाधर तर्कसंगत क्रम के रूप में देखा। उसके दृष्टिकोण में सारी वस्तुएँ एक पैमाने के एक तरफ निम्न स्तर पर कई गुणा और अपूर्ण पदार्थ और दूसरी तरफ उच्च स्तर पर एकीकृत और पूर्ण आकार में एक दूसरे के साथ कहीं न कहीं आपस में संबंधित हैं। और उसने यह विश्वास किया कि दर्शनशास्त्र के कार्यों में से एक यह पहचान करना है कि वास्तविकता का प्रत्येक हिस्सा इस तर्कसंगत क्रम में सही आकार में आ बैठता है।

बहुत ही सरल शब्दों में, परमेश्वर स्वयं पैमाने के उच्च स्तर पर है। वह पहला सिद्धांत है, सभी बातों के कारण के पीछे कारणहीन शक्ति है। परमेश्वर पूर्ण एकता, पूर्ण आकार, पूर्ण प्राणी है। स्वर्गदूत परमेश्वर से एक कदम नीचे आ कर खड़े होते हैं। मनुष्य को स्वर्गदूतों से नीचे रखा गया है क्योंकि वह आत्मिक और भौतिक दोनों है। विभिन्न प्रकारों के पशुओं के जीवन मनुष्यों से नीचे आते हैं; उसके पश्चात् पौधे; जैविक सामग्री इसके पश्चात आती है; वायु, अग्नि, पृथ्वी और पानी के ये चार तत्वों के नीचे अजैविक सामग्री आते हैं; और पैमाने के सबसे नीचे मुख्य पदार्थ आता है।

अपने समय की अरस्तू आधारित संस्कृतियों के साथ संप्रेषण करने के लिए, मध्यकालीन विद्वतावादियों ने अपने धर्मविज्ञान को अरस्तू के इसी नमूने पर व्याख्या करने की कोशिश की। उन्होंने अपने धर्मसैद्धांतिक सारों को आकार देने के लिए कठोर परिश्रम ऊपर से आए धर्मविज्ञान के आधार पर की। ऐसा कहने का अर्थ यह हुआ कि, उन्होंने मसीही शिक्षाओं के साथ आरंभ किया और इनपर जोर देने की मंशा करके आरंभ किया जो कि अरस्तू के पदानुक्रम के उच्चत्तम स्तर की समानता में थी और इसके पश्चात् उन्होंने अपनी शिक्षाओं में निम्न स्तर पर कार्य किया जो कि अरस्तू के पैमाने पर निम्न स्तर की समानता में थी। सभी समयों पर, उन्होंने जटिल तर्कसंगत क्रम को स्पष्ट करने की कोशिश की, जिसने उनपर से आए हुए धर्मविज्ञान को बाहर निकाला, जिसका विवरण उन्होंने यह देते हुए किया कि कैसे प्रत्येक भाग प्रत्येक अन्य भाग के साथ सही आकार में आ बैठता है।

ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की ओर इस प्रवृत्ति को अपेक्षाकृत स्पष्टता से अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका के ढाँचे में देखा जा सकता है। उसका सुम्मा भाग एक परिचय के साथ आरंभ होता है और इसके पश्चात् मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञान में उच्चत्तम प्राथमिकता के विषय की ओर परोक्ष में बढ़ता चला जाता है। एक परमेश्वर का विषय। इसके पश्चात् अक्विनॉस धन्य त्रिएकता की ओर बढ़ता है। इसके पश्चात्, वह सृष्टि पर ध्यान देता है, एक ऐसा अध्याय जो अभी भी परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित उसको ही सभी वस्तुओं का पहला कारक मानते हुए करता है। फिर अक्विनॉस प्राणियों के उच्चत्तम स्तर की ओर बढ़ता है: स्वर्गदूत। फिर इसके पश्चात्, वह सृष्टि के छ: दिनों पर विचार विमर्श करता है जिसमें स्वर्गदूतों से निम्न भौतिक सृष्टि का निपटारा किया गया है। इसके पश्चात् मनुष्य पर एक अध्याय है, जो कि आत्मिक और भौतिक प्राणी है। और अंत में, अक्विनॉस अपने सुम्मा के भाग एक को परमेश्वर के प्राणियों के शासन के साथ अंत करता है जिसमें वे बातें भी सम्मिलित हैं जो कि केवल भौतिक हैं। अक्विनॉस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रचित सुम्मा थियोलोजिका में प्रदर्शित अरस्तू आधारित प्राथमिकताएँ विद्वतावाद की सामान्य रणनीति की विशेषता को प्रकट करती हैं। और इस मंशा ने सदियों से औपचारिक मसीही धर्मविज्ञान की विशेषता को यहाँ तक कि आधुनिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान में भी प्रकट किया है।

अब हमने उन कुछ तरीकों को देख लिया है जिनमें मसीही धर्मविज्ञान नए नियमों की पद्धतियों से आगे की ओर यूनानी तरीकों की सोच की ओर बढ़ा – पहले यह धर्माध्यक्षीय नीओ-प्लेटोवादी द्वैतवाद की ओर बढ़ा, और इसके पश्चात् मध्यकालीन अवधि में अरस्तू आधारित तर्कसंगतवाद की ओर बढ़ा – हमें अब अपने ध्यान को उन तरीकों की ओर मोड़ना चाहिए जिनमें प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की तुलना इन घटनाक्रमों के साथ की गई है।

प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान

प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान पर ध्यान देने के लिए बहुत से तरीके हैं इसलिए हमें स्वयं छोटे से नमूने तक ही सीमित करना होगा। हम प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की तीन अवस्थाओं को देखेंगे: पहला, 16वीं शताब्दी के आरंभिक धर्मसुधारकों का धर्मविज्ञान; दूसरा, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट अंगीकरण; और तीसरा, आधुनिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान। आइए हम आरंभिक धर्मसुधारकों के धर्मविज्ञान से आरंभ करें।

आरंभिक धर्मसुधारक

आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान का लक्ष्य मसीही धर्मविज्ञान को पवित्रशास्त्र की विषय-वस्तु के अनुसार पुनर्निर्मित करना था। उदाहरण के लिए, मार्टिन लूथर और जॉन कॉल्विन, बड़ी गहनता के साथ धर्मविज्ञान में बाइबल के अधिकार को पुन: दृढ़तापूर्वक सामने रखने के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने रोमन कैथोलिकवाद और कट्टरपंथी अन्नाबेपटिस्ट की चुनौतियों का सामना प्राथमिक रूप से परोक्ष में पवित्रशास्त्र का उपयोग करके किया।

और इसके फलस्वरूप, न तो लूथर और न ही कॉल्विन ने कुछ ऐसा लिखा जो परोक्ष में आधुनिक विधिवत धर्मविज्ञान के सदृश हो। इसकी अपेक्षा यह आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान को क्रमबद्ध करने की बात, बड़े विस्तृत रूप में, लूथर के शिष्य फिल्लिप मैल्नखाथौन और कॉल्विन का अनुसरण करने वाले थियोडोर बेजा के हाथों में आ गई। परंतु फिर भी, धर्माध्यक्षीय और विद्वतावादी धर्मविज्ञान की बहुत सी विशेषताएँ आरंभिक धर्मसुधारकों के लेखों में प्रकट होती हैं।

उदाहरण के रूप में, कॉल्विन की प्रसिद्ध इन्स्टिटच्यूट ऑफ क्रिश्चियन रिलीजन अर्थात् 'मसीही धर्म के धर्मसिद्धांत' नामक पुस्तक पर ध्यान दें। इन्स्टिटच्यूट पहले स्थान पर प्रोटेस्टेंटवादियों पर झूठी शिक्षा के दोष के विरूद्ध बचाव करने के लिए लिखा गया था। परंतु प्रोटेस्टेंटवादियों के दृष्टिकोणों का बचाव करने में, कॉल्विन ने धर्मविज्ञान के निर्माण में विशेष संबंध को इस तरीके से प्रतिबिम्बित किया जो कि धर्मसुधारकों के आने से पहले शताब्दियों के मध्य विकसित हुए थे। अब, यह कहना ठीक नहीं होगा कि कॉल्विन ने केवल धर्माध्यक्षीय-कालीन और मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञान का ही अनुसरण किया। फिर भीफिर भी, अपने इन्स्टिटच्यूट में उसने अरस्तू के तर्क के साथ विशेष संबंध को इस तरीके से प्रदर्शित किया है जिसमें उसने तकनीकी शब्दावली का उपयोग किया; अपने धर्मविज्ञान को विस्तृत रूप में तर्क-वाक्य में व्यक्त किया है; न्यायबद्धता का निर्माण विषयों के माध्यम से तर्क का उपयोग करके किया; और अपने धर्मविज्ञान को ऊपर से आए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं के नूमनों के आधार पर निर्मित किया है।

समय हमें कॉल्विन के लेख के प्रत्येक तत्व को प्रदर्शित करने की अनुमति नहीं देता, परंतु हम बड़ी आसानी से देख सकते हैं कि उसका तर्क के लिए किया हुआ समर्थन धर्मविज्ञान में एक केन्द्रीय औजार है और कैसे उसने ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं का अनुसरण किया। एक तरफ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उस तरीके को सुनिए जिसमें कॉल्विन ने द्वन्द्वात्मक या तर्क के अध्ययन के लाभों की पुष्टि की है, जबकि यह अविश्वासियों के लिए विकसित किया गया था।

पुस्तक दो के,इन्स्टिटच्यूट के अध्याय दो में उसने इन निम्न शब्दों को लिखा है:

> परंतु यदि प्रभु हमारी सहायता अविश्वासियों के द्वारा भौतिकी, द्वन्द्वात्मकवाद, गणित और अन्य इस जैसे विज्ञानों में किए हुए कार्यों और सेवकाई के द्वारा करने के लिए प्रसन्न है, तो हम इनका उपयोग करें, परंतु कहीं ऐसा न हो, कि परमेश्वर के द्वारा हमें स्वत: दिए हुए वरदानों के प्रस्ताव की उपेक्षा करने के कारण, हमें अपनी सुस्ती के लिए उचित सजा दी जाए।

द्वन्द्वात्मकवाद या तर्क के इस समर्थन के साथ, कॉल्विन ने न केवल इस ध्यान को अपने लेखों में प्रदर्शित किया कि पवित्रशास्त्र क्या शिक्षा देता था बल्कि इन बाइबल आधारित शिक्षाओं को इस तरह व्यक्त किया जो कि अरस्तू के तर्क के मानकों पर पूरे उतरते थे।

एक तरफ तो, एक बड़े पैमाने पर कॉल्विन रचित इन्स्टिटच्यूट ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं को इस तरह से प्रकट करता है जो कि बड़ी निकटता से मध्यकालीन धर्मविज्ञान के ढाँचे को प्रदर्शित करता है। इन्स्टिटच्यूट चार पुस्तकों में विभाजित है : पहली पुस्तक सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के ज्ञान को दर्शाती है। इस पुस्तक में कॉल्विन ने स्वयं परमेश्वर के बारे में, और परमेश्वर प्रभुता सम्पन्न अर्थात् सर्वसत्ताधारी निर्माता और ब्रह्माण्ड को संभालने वाला है, का विवरण दिया है। पुस्तक दो का ध्यान छुटकारा देने वाले के रूप में परमेश्वर के ज्ञान को दर्शाती है; यह ज्यादात्तर परमेश्वर के इस संसार में हस्तक्षेप के साथ संबंधित पार्थिव विषयों को दर्शाती है जैसा कि मसीह ने अपने लोगों के लिए उद्धार में पूरा किया है। पुस्तक तीन अनुग्रह की प्राप्ति, और इसके लाभ और प्रभावों का विवरण देती है। यहाँ पर कॉल्विन ने यह वर्णन किया है कि कैसे उद्धार जिसे मसीह ने पूरा किया प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होता है और कौन सी आशीषें और प्रभाव उद्धार की प्राप्ति प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में लेकर आता है। और पुस्तक चार का ध्यान इनसे निम्न, बहुत ही व्यावहारिक विषयों पर है : अर्थात् कलीसिया, इसके संस्कार, और लोक प्रशासन के साथ इसका संबंध ।

इस तरह से हम देख सकते हैं कि कॉल्विन उच्चस्तरीय अलौकिक से निम्नस्तरीय अवधारणाओं, जो कि किसी एक व्यक्ति के प्रतिदिन के जीवन से संबंधित हो, की ओर बढ़ा। परमेश्वर सृष्टिकर्ता के रूप में महान प्रभुता सम्पन्न अर्थात् सर्वसत्ताधारी होने के विषय का सबसे पहले निपटारा किया गया है। इसके पश्चात् दूसरे स्थान पर परमेश्वर का मसीह में होकर इतिहास में हस्तक्षेप का। इससे आगे व्यक्तिगत लोगों का उद्धार का विषय है। और फिर अंत में, हम व्यावहारिक विषय, प्रतिदिन की मसीही बातों, की ओर ध्यान केन्द्रित होते हुए पाते हैं।

इस तरह से, उसका तर्क और ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान के संदर्भ में समर्थन के द्वारा कॉल्विन निरंतर उन धर्मवैज्ञानिक पद्धतियों और प्राथमिकताओं का अनुसरण करता चला गया जो कलीसियाई इतिहास में धर्मसुधार के आने से पहले विकसित हुई थी।

इस बात की पहचान के साथ कि आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की निर्भरता धर्मविज्ञान के आरंभिक घटनाक्रमों पर निर्भर है, हमें इस बात की ओर भी संकेत करना चाहिए कि ऐसा ही कुछ प्रोटेस्टेंटवादियों के विश्वासवचनों की धरोहर के साथ भी सत्य है। संसार के विभिन्न क्षेत्रों में प्रोटेस्टेंटवादियों ने कई शास्त्रीय धर्मशिक्षा-प्रश्नोत्तरियों और विश्वासवचनों का उत्पादन किया है जो कि उनके विश्वास को सारांशित करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शास्त्रीय अंगीकार

उदाहरण के लिए, विश्वास का वेस्टमिंस्टर अंगीकार जो कि लगभग 1647 के आसपास लिखा गया था पर ध्यान दें। आरंभिक प्रोटेस्टेंटवादियों के साथ यह कहना ठीक नहीं होगा कि वेस्टमिंस्टर धर्मविज्ञान दृढ़ता के साथ विद्वतावादी है, क्योंकि वह महत्वपूर्णता जो इसने पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को ऊपर दी है। परंतु, यह बात फिर भी सत्य है कि अंगीकार उन दृष्टिकोणों के द्वारा प्रभावित है जो मध्यकालीन युग के धर्मविज्ञान को दिखाते हैं। यह अंगीकार अरस्तू के तर्क को इस तरह से पालन करता है कि यह तकनीकी शब्दावलियों के लिए, कैसे तर्क-वाक्य अभिव्यक्ति का केन्द्रीय आकार हैं, किस तरह से सावधानी से की हुई तर्कसंगत न्यायबद्धता धर्मविज्ञान के प्रस्तुतीकरण के लिए आधार है, और कैसे धर्मविज्ञान के विषयों का क्रम ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं के अनुसार होना चाहिए, आदि के लिए बहुत अधिक मात्रा में इसपर निर्भर है।

हम विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकार में तर्क की अति महत्वपूर्ण भूमिका देख सकते हैं। यह विशेषकर अध्याय 1, के अनुच्छेद 6 में स्पष्ट पाया जाता है। सुनिए किस तरह से इस विषय को वहाँ लिखा गया है।

> सभी बातों के लिए परमेश्वर का सारा परामर्श जो उसकी अपनी महिमा, मनुष्य के उद्धार, विश्वास और जीवन के लिए आवश्यक है, वे या तो पवित्रशास्त्र में स्पष्ट व्यक्त कर दिए गए हैं, या फिर पवित्रशास्त्र से भले और आवश्यक परिणामों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर की महिमा और हमारे उद्धार और विश्वास के लिए प्रत्येक आवश्यक बात दो तरीकों से पाई जा सकती है। एक तरफ तो, ये सच्चाइयाँ स्पष्ट रूप से पवित्रशास्त्र में व्यक्त कर दी गई हैं। कहने का अर्थ यह हुआ कि बाइबल कुछ निश्चित आवश्यक सच्चाइयों की स्पष्ट शिक्षा देती है। परंतु दूसरी तरफ, अन्य महत्वपूर्ण मसीही सिद्धांतों को "पवित्रशास्त्र से भले और आवश्यक परिणामों... के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।" यह कथन तर्क या बुद्धि को प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान में बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण भूमिका देता है। जब इन प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञानियों ने अपने लेखों को लिखा, तो उन्होंने तर्क और बुद्धि का उपयोग पवित्रशास्त्र के उपयोगों को पाने के लिए किया। इस तरह से, विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकार एक निश्चित प्रवृत्तियों को आरंभिक समयों की पद्धतियों की ओर प्रकट करता है।

इससे परे, विश्वास के अंगीकार का व्यापक आकार ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं को भी प्रकट करता है। अंगीकार इस क्रम का अनुसरण करते हैं: "पवित्रशास्त्र" शीर्षक नाम से आरंभिक अध्याय के पश्चात्, अध्याय दो और तीन का ध्यान उच्चत्तम आत्मिक वास्तविकता पर ध्यान केन्द्रित करना है – अर्थात् स्वयं परमेश्वर पर। इसके पश्चात्, अध्याय चार और पाँच सृष्टि के विषय का निपटारा करते हैं। फिर यहाँ से भी आगे प्रतिदिन के जीवन की बातें या पार्थिव विषयों की ओर बढ़ते हुए, अध्याय छ: से लेकर सत्रह मनुष्य के पाप में पतन और परिणाणस्वरूप छुटकारे के विषय को देखते हैं। इसके पश्चात्, अध्याय अठारह से इकत्तीस कलीसिया और मसीही जीवन पर बहुत अधिक व्यावहारिक विषयों का वर्णन करते हैं। अंत में, अध्याय बत्तीस और तैंतीस संसार के इतिहास के अंत को संबोधित करते हैं।

इस ढाँचे में जिस धर्मवैज्ञानिक प्राथमिकताओं को प्रदर्शित किया गया है वे अधिकांश प्रोटेस्टेंट शास्त्रीय अंगीकार और धर्मशिक्षा संबंधी प्रश्नोत्तरियाँ हैं।

आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की इन सामान्य प्रवृत्तियों के साथ और प्रोटेस्टेंट अंगीकार को ध्यान में रखते हुए, हम देख सकते हैं कि आधुनिक विधिवत धर्मविज्ञान निरंतर इन्हीं प्रवृत्तियों का पालन कर रहा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आधुनिक विधिवत प्रक्रियाएँ

एक उदाहरण के द्वारा, प्रिन्सटन सेमीनरी के चार्ल्स होज़ जो 1797 से लेकर 1878 तक रहे, के विधिवत धर्मविज्ञान पर ध्यान दें। अपने पूरे विधिवत धर्मविज्ञान में, होज़ ने तर्क और बुद्धि को एक केन्द्रीय भूमिका दी है जब उसने पारंपरिक तकनीकी शब्दों का उपयोग किया, तर्क-वाक्यों पर निर्भर हुआ, अपने लेखों को सावधानी से तर्कसंगत न्यायबद्धता के साथ निर्मित किया और ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं का अनुसरण किया।

एक तरफ तो, होज़ ने धर्मविज्ञान में तर्क की भूमिका का समर्थन किया जिस कारण यह मध्यकालीन विद्वतावादी मापदंड और आरंभिक प्रोटेस्टेंटवादियों से आगे की ओर बढ़ा। सुनिए उस तरीके को जिसमें उसने यह वर्णन किया है कि कैसे धर्मविज्ञानियों को उनकी पद्धति का अभ्यास करना चाहिए जो कि आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुरूप हों। विधिवत धर्मविज्ञान पर लिखी हुई अपनी पुस्तक के अध्याय एक, अध्याय दो, और भाग पाँच में उसने इन निम्न शब्दों को लिखा है:

> विज्ञानवादी प्रकृति का अध्ययन करने के लिए कुछ निश्चित अनुमानों के साथ आता है।
> वह अपनी अवधारणाओं के भाव की विश्वसनीयता के सही होने का अनुमान लगाता है...
> उसे साथ ही अपनी मानसिक कार्य प्रणाली की विश्वसनीयता के सही होने का भी अनुमान लगाना चाहिए...
> उसे उन सत्यों की निश्चितता पर भी निर्भर होना चाहिए जिसे अनुभव से नहीं सीखा जाता है...प्रत्येक प्रभाव का कोई एक कारण होना चाहिए; इसी तरह से यही कारण प्रत्येक परिस्थितियों के साथ होता है, इसी तरह के प्रभावों को उत्पन्न करेगा।

यह वर्णन कर लेने के बाद कि कैसे प्राकृतिक विज्ञान को उसके दिनों में समझा गया था, होज़ इसके पश्चात् विधिवत धर्मविज्ञानों के लिए एक शब्द को जोड़ता है।

> ...जैसे विज्ञानवादी के लिए प्रकृति है वैसे ही धर्मविज्ञानियों के लिए बाइबल है। यह तथ्यों का भण्डार-गृह है; और उसकी पद्धति यह पता लगाने की है कि बाइबल क्या शिक्षा देती है, यह बिलकुल उसी तरीके का उपयोग है जिसमें प्रकृति दार्शनिक यह पता लगाते हैं कि प्रकृति क्या शिक्षा देती है।

इस तरह से हम देखते हैं कि यद्यपि होज़ ने तर्क और बुद्धि के प्रति अपनी समझ में संशोधन उसके दिनों के आधुनिक विज्ञान के अनुसार किया है, एक विधिवत धर्मवैज्ञानिक होने के नाते वह तर्क और बुद्धि के निर्माण होते हुए धर्मविज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण औजार के रूप में देखने की एक लम्बी परंपरा के साथ खड़ा हुआ।

एक तरफ तो, होज़ के विधिवत धर्मविज्ञान ने ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं का अनुसरण किया। उसके विधिवत धर्मविज्ञान की एक झलक मसीही धर्मविज्ञान के लिए उसके सार के व्यापक ढाँचे को प्रकट करती है।

उसका विधिवत धर्मविज्ञान के परिचय के आरंभ के साथ भाग एक आता है जिसका शीर्षक या उचित धर्मविज्ञान दिया गया है। वहाँ पर वह स्वयं परमेश्वर के धर्मसिद्धांत का निपटारा करता है। भाग दो का शीर्षक “मानव विज्ञान” दिया गया है जो कि प्राथमिकताओं के पैमाने को नीचे की ओर मानवता के लिए ले आता है। इसके पश्चात् भाग तीन, “उद्धार का विज्ञान” परमेश्वर की उच्चत्तम अवधारणा मसीह में किए हुए कार्य के साथ आरंभ होती हुई आती है और फिर लोगों के जीवनों में उद्धार के उपयोग, और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसके पश्चात् अनुग्रह के व्यावहारिक अर्थ की ओर ले चलती है। और पारंपरिक क्रम का अनुसरण करते हुए उसने अपने धर्मविज्ञान का अंत भाग चार के साथ किया, अर्थात् “युगांतविज्ञान"।

इस तरह से हम देखते हैं कि प्रत्येक युग में, जबकि विश्वासयोग्य मसीही विश्वासी निरंतर पवित्रशास्त्र की अधीनता में बने रहे, उन्होंने साथ ही पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ ऐसे व्यक्त कीं जो कि परिवर्तित होती हुई अन्यजाति संस्कृतियों के लिए जिनमें वे रहते थे, उपयुक्त थीं।

अब क्योंकि हमने यह पता लगा लिया है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान मसीही धर्मविज्ञान को व्यक्त करने के मुख्य तरीके के रूप में विकसित हुआ, हमें अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए, जो कि विधिवत धर्मविज्ञान प्रक्रिया में मूल्य और खतरों से संबंधित है। भविष्य के अध्यायों में हम इन विषयों को अधिक विस्तार से देखेंगे। परंतु, इस समय, हम स्वयं को केवल कुछ ही व्यापक बातों तक सीमित रखेंगे।

मूल्य और खतरे

विधिवत प्रक्रिया के कुछ सकारात्मक और नकारात्मक गुणों को देखने के लिए, हमें स्मरण रखना चाहिए कि कैसे हमने अन्य अध्यायों में धर्मविज्ञान के निर्माण का वर्णन किया है। आपको स्मरण होगा कि कैसे हमने इस सच्चाई के बारे में बोला था कि परमेश्वर ने तीन मुख्य स्रोतों को प्रदान किया जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए जब हम मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं : पवित्रशास्त्र की व्यख्या, समुदाय में परस्पर व्यवहार और मसीही जीवन। पवित्रशास्त्र की व्याख्या में विशेष प्रकाशन पर ध्यान देना हमारा तरीका है और अन्य दो स्रोत ज्यादात्तर परमेश्वर के सभी बातों में दिए हुए सामान्य प्रकाशन पर ध्यान देते हैं। समुदाय में परस्पर व्यवहार हमें सामान्य प्रकाशन: अर्थात् अन्य लोगों की साक्षी, विशेषकर जो मसीही हैं, तक पहुँचने के लिए एक महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करता है। और मसीही जीवन सामान्य प्रकाशन के अन्य महत्वपूर्ण आयामों पर हमारे ध्यान को आकर्षित करता है– वे बातें जिन्हें हम मसीह में अपने जीवन जीने, पाप के साथ संघर्ष करने और आत्मा में चलने के द्वारा अनुभवों से सीखते हैं। ये तीन धर्मवैज्ञानिक स्रोत वे साधारण तरीके हैं जिसमें पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन उसके प्रकाशन को समझने और मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करने के लिए करता है।

आपको यह भी स्मरण होगा कि ये मुख्य धर्मवैज्ञानिक स्रोत हमारी सहायता हमारे विश्वास के उन स्तरों की जाँच करने में करते हैं जो हमारी विशेष मान्यताओं के लिए होना चाहिए। व्याख्याओं, समुदाय में परस्पर व्यवहार और मसीही जीवन की साक्षी किसी एक विशेष विषय पर सामंजस्यपूर्ण और प्रबल हैं, फलस्वरूप उस विषय के बारे में हमारी दृढ़ता का स्तर और भरोसा सामान्य रूप से बढ़ते चले जाना चाहिए। परंतु, जब ये विषय सामंजस्यहीन और कम प्रबल होते तो हमारी दृढ़ता और भरोसे के स्तरों को सामान्य रूप से दिए गए विषय पर कम होना चाहिए। क्योंकि व्याख्या, सामुदायिक सहभागिता और मसीही जीवन मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिकाओं को अदा करता है, हम विधिवत धर्मविज्ञान के मूल्य और खतरों की कुछ विशिष्ट जाँच यह पूछते हुए कर सकते हैं कि कैसे विधिवत धर्मवैज्ञानिक इनमें से प्रत्येक स्रोत को सम्मिलित करते हैं। कैसे विधिवत धर्मविज्ञान परमेश्वर प्रदत इन तीन स्रोतों के उपयोग के लिए हमारी क्षमता को सक्षम बनाती या इसके प्रति रूकावट उत्पन्न करती है?

हम सबसे पहले विधिवत प्रक्रिया का मसीही जीवन के, दूसरा, हम विधिवत प्रक्रिया और समुदाय में परस्पर व्यवहार या सहभागिता के; और तीसरा विधिवत प्रक्रिया और व्याख्याके संबंध पर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चर्चा करेंगे। आइए सर्वप्रथम हम यह देखें कि कैसे विधिवत प्रक्रिया के पास मसीही जीवन के लिए दोनों सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं।

मसीही जीवन

मसीही जीवन का विवरण कई विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है और हम आने वाले भविष्य के अध्यायों में खोज करेंगे कि यह कैसे कार्य करता है। इस समय, हम मसीही जीवन के स्रोत पर एक संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करेंगे। हमारे अध्ययन में, हम मसीही जीवन पर बात करेंगे कि इसमें हमारा पवित्रीकरण, पवित्रता में हमारा विकास, तीन परस्पर-संबंधित क्षेत्रों में सम्मिलित है। हमें एक वैचारिक स्तर पर, एक व्यावहारिक स्तर पर और एक भावनात्मक स्तर पर पवित्रीकृत होने की आवश्कता है। दूसरे शब्दों में, हमारे विचार परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करें। हमारे कार्य परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करें। और हमारी भावनाएँ भी परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करें। हमने मसीही जीवन के इन तीनों आयामों को शास्त्र-सम्मत या प्रामाणिक, शास्त्रीय-आचरण और शास्त्रीय-करूणा के रूप में बात की है।

कई ऐसे महत्वपूर्ण तरीके हैं जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान मसीही जीवन के इन तीन आयामों के प्रति हमारी क्षमता के लाभ की या तो वृद्धि करता या फिर रूकावट बनता है। आइए सर्वप्रथम हम अधिक सकारात्मक पक्ष को देखें, कि कैसे विधिवत प्रक्रिया धर्मविज्ञान के लिए एक स्रोत के रूप में मसीही जीवन में वृद्धि करता है।

वृद्धि

सकारात्मक पक्ष की ओर, विधिवत धर्मविज्ञान अपनी धार्मिक निष्ठा के क्षेत्र में दृढ़ है। यह विधिवत प्रक्रिया को सोचने का एक तरीका है, जो उन विषयों को उचित रूप से ध्यान देने के लिए एक वैचारिक ढाँचा उपलब्ध कराता है जिनका हम हमारे प्रतिदिन के जीवन में सामना करते हैं। जब हम दिन प्रतिदिन मसीह के साथ जीवन जीने का प्रयास करते हैं, तो हम अक्सर ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जहाँ पर हमें परमेश्वर, हमारे स्वयं के विषय और हमारे चारों ओर के संसार के प्रति एक स्थाई, तार्किक रूप से सुसंगत, चिरस्थाई दृष्टिकोण को अपनाने की योग्यता की आवश्यकता होती है। विधिवत धर्मविज्ञान कई महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है जिसमें हम इस तरह के दृष्टिकोणों को प्राप्त कर सकते हैं। जब हमारे पास केवल असम्बद्ध मान्यताएँ होती हैं, तो हम अपनी परिस्थितियों का आकलन करने, हमारे जीवनों के बारे में प्रश्नों का उत्तर देने, या ऐसे निर्णय लेने के लिए सही रूप से तैयार नहीं होते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हों।

मुझे स्मरण है एक बार मैं अपने एक मित्र से मुलाकात करने के लिए अस्पताल गया था। वह बहुत ज्यादा बीमार था और उसको बहुत ज्यादा प्रार्थना की आवश्यकता थी। परंतु जब मैंने उससे पूछा कि क्या वह परमेश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना कर रहा था, तो उसने उत्तर दिया कि, “नहीं।” मैं उसके उत्तर से अचम्भित रह गया और उससे इसका कारण पूछा। उसने मुझसे इस तरह से कहा कि, “मैं परमेश्वर की प्रभुता में विश्वास करता हूँ। इसलिए, मैं जानता हूँ कि प्रार्थना करना कोई भिन्नता नहीं ला सकता।”

मेरे मित्र के साथ क्या हो गया था? ठीक है, कई तरह से उसने मसीही धर्मविज्ञान को थोड़ा बहुत आत्मसात् कर लिया था परंतु उसने इसे ही पूरी मसीही शिक्षा मान लिया था। उसने यह तो ठीक समझ लिया था कि परमेश्वर पूरे इतिहास को अपने नियन्त्रण में रखे हुए है; यह कि वह पूरी तरह से प्रभुता सम्पन्न है। परंतु मेरा मित्र यह नहीं जानता था कि इस तथ्य को मसीही विश्वास के अन्य सत्यों के साथ कैसे संबंधित किया जाए, जैसे कि प्रार्थना के माध्यम का उपयोग करना, वे तरीके जिनमें परमेश्वर प्रार्थना को उसके प्रभुता वाले प्रयोजनों को पूरा करने के लिए उपयोग करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर की प्रभुता प्रार्थना की आवश्यकता को कम नहीं कर देती, यह तो वास्तव में प्रार्थना के लिए तर्कसंगत आधार है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर प्रभुता सम्पन्न है कि जब हम प्रार्थना करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर सब कुछ को अपने नियन्त्रण में रखता है जब हम उसकी ओर सहायता के लिए मुड़ते हैं। यदि परमेश्वर सब कुछ नियन्त्रण में नहीं रखता, तो हम किसी और की ओर सहायता के लिए मुड़ जाते। यदि मेरा मित्र इन बातों को समझ गया होता, तो वह विधिवत धर्मविज्ञान में अच्छी तरह से प्रशिक्षित हो जाता, यदि वह परमेश्वर की प्रभुता और प्रार्थना के मध्य के संबंध को समझ जाता तो वह अपने मसीही जीवन के थकावटी अनुभव के मध्य इसे यापन करने के लिए और भी अधिक उत्तम तरीके से सुसज्जित हो जाता।

इसी के साथ, यदि शास्त्र-सम्मतता के लिए विधिवत धर्मविज्ञान सकारात्मक हो सकता है, तो जब हम इससे बहुत ज्यादा अपेक्षा करते हैं, तब यह मसीही जीवन में रूकावट भी उत्पन्न कर सकता है ।

रूकावट

विधिवत धर्मविज्ञान हमारे ध्यान को मसीही विश्वास के प्रति सावधानीपूर्ण तरीके से तर्कसंगत आत्मबोध की ओर ले चलता है और यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। परंतु हम अपनी मान्यताओं को एक तार्किक पद्धति में रखने के द्वारा इतना ज्यादा ध्यानमग्न हो जाते हैं कि हम मसीही जीवन के अन्य आयामों को ही अनदेखा कर देते हैं, विशेषकर शास्त्रीय-आचरण को, अर्थात् अपने व्यवहारों को परमेश्वर की इच्छा के साथ पुष्टि करना, और शास्त्रीय-करूणा को, अर्थात् अपनी भावनाओं को परमेश्वर की इच्छा के साथ पुष्टि करना।

उदाहरण के लिए, मसीही विश्वासी जो कि बहुत ज्यादा विधिवत प्रक्रिया में सम्मिलित हैं अक्सर अपने ध्यान को मसीही विश्वास के व्यवहार और भावनाओं के लिए कम कर देते हैं। वे आराधना, अनुग्रह के माध्यमों में सम्मिलित होना, अन्यों के प्रति सेवकाई और पवित्र आत्मा का अंतर्बोध और भावनात्मक मार्गदर्शन जैसी बातों को अधिकारहीन कर देते हैं। वे मसीही जीवन को वैचारिक विषयों, शास्त्र-सम्मत होने तक सीमित कर देते हैं और मसीही जीवन के अधिक व्यावहारिक और व्यक्तिगत आयामों को हटा देते हैं। तर्कसंगत विधिवत धर्मविज्ञान महत्वपूर्ण है, परंतु हमारा विश्वास मात्र सिद्धांतों की एक पद्धति ही नहीं है। यह एक व्यावहारिक विश्वास है जिसे अभ्यास में लाया जाना चाहिए और एक व्यक्तिगत संबंध है जिसे सींचा जाना चाहिए।

मैं आपको नहीं बता सकता कि कितनी बार मैंने इस समस्या का सामना धर्मवैज्ञानिक विद्यार्थियों के जीवनों में किया है। मुझे स्मरण है कि एक विद्यार्थी जिसने बहुत सी कलीसियाओं से पास्टर बनने के लिए दूरभाष से निवेदनों को पाया था। वह बहुत ज्यादा हताश इसलिए था क्योंकि वह नहीं जानता था कि किस तरह से एक निर्णय को लेना है। उसने मुझ से कहा कि, “मैंने विधिवत धर्मविज्ञान को बहुत ज्यादा पढ़ा है। परंतु यह निर्णयों में एक सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक विषय में मेरी कोई सहायता नहीं कर रहा है जो कि मुझे अपने पूरे जीवन भर सामना करना होगा।”

> इसलिए मैंने उससे पूछा, “आप कैसा अनुभव करते हैं कि पवित्रआत्मा आपका मार्गदर्शन कर रहा है? क्या आपने इस निर्णय के लिए उपवास सहित प्रार्थना में समय व्यतीत किया है?"
> मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए? उसने उत्तर दिया। मैं इस विषय को तार्किक और विधिवत तरीके से हल कर लेना चाहता हूँ।”

ठीक है, जो मसीही विश्वासी विधिवत धर्मविज्ञान के लक्ष्यों को बहुत अधिक उत्साह के साथ थामते हैं वे अक्सर पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत सेवकाई और विश्वास को व्यवहार में लाए जाने का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अनदेखा करते हैं। और यह गंभीरता के साथ उसके फलदाई मसीही जीवन में रूकावट उत्पन्न कर सकता है।

मसीही जीवन जीने के लिए हमारी क्षमता में वृद्धि और कमी उत्पन्न करने के अतिरिक्त, विधिवत प्रक्रियाओं को सामुदायिक सहभागिता में भी बहुत सारे सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं। हमारे भविष्य के अध्यायों में हम और अधिक सावधानी से सामुदायिक सहभागिता पर ध्यान देंगे, परंतु अभी के लिए हम केवल इस धर्मवैज्ञानिक स्रोत की मुख्य गतिशीलताओं का ही उल्लेख करेंगे।

समुदाय में सहभागिता

तीन बातों के सम्मिलित होने के कारण समुदाय में सहभागिता के बारे में सोचना सहायता प्रदान करता है : हमारी मसीही धरोहर, जो कि अतीत में पवित्र आत्मा का कार्य क्षेत्र है, हमारा वर्तमान समुदाय, जो कि हमारे समकालीन समुदाय में पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का क्षेत्र है, और हमारे व्यक्तिगत निर्णय, जो कि पवित्र आत्मा का हम में से प्रत्येक के जीवन में व्यक्तिगत रूप से समुदाय के भीतर कार्य करना है। मसीही विश्वासी एक दूसरे के साथ सहभागिता करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि कलीसिया वह केन्द्रीय क्षेत्र है जिसके भीतर पवित्र आत्मा इस संसार में सेवकाई कर रहा है। और मसीह हमसे अपेक्षा करता है कि हम अपने धर्मविज्ञान को अन्यों के साथ संगति करके निर्मित करें जो कि पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं।

सहभागिता के इन तीन क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए : धरोहर, वर्तमान समुदाय और व्यक्तिगत निर्णय, हमें यह देखने में सहायता करेंगे कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि करता या रूकावट बनता है।

वृद्धि

एक तरफ तो, समुदाय के लिए विधिवत धर्मविज्ञान के सर्वोत्तम मूल्यों में से एक वह तरीका है जो हमें मसीही धरोहर के लिए सक्षम बनाता है, कि कैसे मसीही विश्वासियों ने अतीत में अपने विश्वास को समझा और उसके अनुसार जीवन जीया। विधिवत प्रक्रियाएं धर्मविज्ञान का निर्माण उस दृष्टि से करती हैं जिसमें पवित्र आत्मा ने शिक्षाओं को पहले ही मसीह की कलीसिया को, यह ध्यान देते हुए शिक्षित किया है कि कैसे अतीत में महान पुरूषों और स्त्रियों ने धर्मविज्ञान को निर्मित किया था। और इसी कारण से, यह अतीत के मसीही समुदाय के साथ हमारी सहभागिता की क्षमता की बहुत ज्यादा वृद्धि कर सकती है।

हमारे आज के दिनों में, अधिकांश मसीही विश्वासी धर्मविज्ञान को ऐसे देखते हैं जैसे कि यह बहुत ही व्यक्तिगत हो। ऐसा आभास होता है कि अधिकांश मसीही विश्वासियों का सर्वोच्च धर्मवैज्ञानिक लक्ष्य एक ऐसे धर्मविज्ञान का निर्माण करना है जो कि स्वयं पर ही आधारित हो और इस बात का कोई महत्व नहीं कि दूसरे क्या विशवास करते हैं। मसीह हमें धर्मविज्ञान के लिए हमारे दृष्टिकोण में वास्तविकता के लिए बुलाहट इस अर्थ में देता है कि इसे प्रामाणिक होना चाहिए, और वह हमसे चाहता है कि हम इसमें अपने संपूर्ण हृदय के साथ सम्मिलित हों। परंतु धर्मविज्ञान तक केवल व्यक्तिगत विषय के रूप में पहुँचना हमें उन सर्वोत्तम स्रोतों से खाली हाथ कर देता है जो परमेश्वर ने हमें धर्मविज्ञान के लिए दिए हैं: अर्थात् पवित्र आत्मा का अभी तक के युगों में किया हुआ कार्य।

अब, जब विश्वासी आज कभी-कभी अन्यों के साथ सहभागिता करते हैं तो यह सामान्य रूप से वर्तमान समुदाय के स्तर पर होता है। हम पुस्तकों को पढ़ते हैं और हमारे समकालीन लोगों के द्वारा दिए सन्देशों और व्याख्यानों को सुनते हैं। फिर भी, विधिवत धर्मविज्ञान, हमारे ध्यान को उन अद्‌भुत तरीकों की ओर मोड़ने हमारी सहायता करता है जिनमें पवित्र आत्मा ने अतीत में कलीसिया का मार्गदर्शन किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जबकि यह सत्य है कि विधिवत प्रक्रिया हमारी सहभागिता को समुदाय में इस तरीके के साथ वृद्धि करती है, उसी समय, विधिवत धर्मविज्ञान उन तरीकों में भी सीमित है जिनमें ये हमारे लिए सहभागिता को खोलते हैं।

रूकावट

जब हम विधिवत धर्मविज्ञान के पारंपरिक ध्यान को, इस बात का अनदेखा करते हुए बहुत अधिक मात्रा में ले लेते हैं, कि पवित्र आत्मा वर्तमान समुदाय को क्या शिक्षा देता है और वह आज कैसे हमारे व्यक्तिगत निर्णयों को सूचित करता है, तो यह अप्रासंगकिता की ओर ले जा सकता है। चाहे अतीत का धर्मविज्ञान कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न रहे, कलीसिया आज नई चुनौतियों का सामना कर रही है और पवित्र आत्मा अभी भी कलीसिया को शिक्षा दे रहा है कि वह कैसे इन चुनौतियों का सामना कर सकती है।

मैं एक मित्र से कलीसिया में रविवार की सुबह की हुई एक मुलाकात को स्मरण कर सकता हूँ। वह शहर के दूसरे भाग में अन्य कलीसिया का सदस्य था, परंतु वह उस दिन हमारी कलीसिया में आराधना के लिए आया हुआ था। इसलिए, मैंने उससे पूछा, “आज आप यहाँ कैसे? क्या आप उस कलीसिया से संबंधित नहीं हो?"

उसकी प्रतिक्रिया ने स्पष्ट कर दिया। उसने कहा, “मैं उस कलीसिया को प्रेम करता था क्योंकि वहाँ का पास्टर विधिवत धर्मविज्ञान की शिक्षा देता था। मैंने बहुत कुछ सीखा है कि मसीही विश्वासियों को विश्वास के लिए क्या उपयोग करना चाहिए, परंतु अब और ज्यादा मैं उस कलीसिया में नहीं रह सकता, मैं बहुत ज्यादा यह अनुभव करता हूँ कि मानो मैं आज के जीवन से संपर्क ही खोता जा रहा हूँ।”

इस तरह की समस्या जो अक्सर उस समय उठ खड़ी होती है जब मसीही विश्वासी विधिवत धर्मविज्ञान के लिए बहुत ज्यादा उत्साहित हो जाते हैं। वे धरोहर को इतना ज्यादा ध्यान दे देते हैं कि वे यह नहीं जानते कि कैसे समकालीन विषयों को संबोधित किया जाता है। विधिवत धर्मविज्ञान अक्सर हमें वर्तमान के समुदाय और व्यक्तिगत निर्णय की ओर ध्यान अदा करने में रूकावट उत्पन्न करता है।

चाहे यह कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान हमें मसीही जीवन और सामुदायिक सहभागिता के लिए सुसज्जित करता है, इसका विशेष प्रभाव पवित्रशास्त्र के हमारी व्याख्या पर भी पड़ता है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

हम भविष्य के अध्यायों में, व्याख्याओं पर और ज्यादा ध्यान से देखेंगे, परंतु अभी के लिए हम उन मुख्य तरीकों की ओर संकेत देंगे जिनमें पवित्र आत्मा ने कलीसिया को बाइबल की व्याख्या करने की शिक्षा दी। इन्हें तीन मूलभूत श्रेणियों में सारांशित करना ज्यादा सहायतापूर्ण होगा साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और विषयात्मक विश्लेषण। इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण विशेष योगदान देता है, परंतु प्रत्येक एक दूसरे पर निर्भर है। इसलिए, जब हम व्याख्याओं के लिए विधिवत धर्मविज्ञान की सीमाओं और मूल्यों का आकलन करते हैं, हमें इस बात को स्पर्श करना चाहिए कि यह कैसे पवित्रशास्त्र की व्याख्या में इन दृष्टिकोणों के साथ संबंधित होता है।

साहित्यिक विश्लेषण। साहित्यिक विश्लेषण व्याख्याओं का वह दृष्टिकोण है जो बाइबल को प्राथमिक रूप से ऐसा देखता है जैसे कि वह एक चित्र, या छायाप्रति हो; हम इसे कला के साहित्यिक कार्य के रूप में देखते हैं। इस तरह की व्याख्याहाल के दशकों में ज्यादा मात्रा में प्रचलित हुए हैं।

विस्तृत रूप से कहें तो साहित्यिक विश्लेषण बाइबल को ऐसे समझने का प्रयास करता है कि जैसे यह एक मानवीय लेखकों के द्वारा रूपरेखित दस्तावेज है जो उन्होंने उनके श्रोताओं के लिए परंपरागत

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

साहित्यिक तरीकों के प्रभाव में लिखा है। साहित्यिक विश्लेषण में बहुत ज्यादा ध्यान इस तरह के प्रश्नों को दिया जाता है: “मानवीय लेखकों के क्या उद्देश्य थे?” “कैसे एक अनुच्छेद के साहित्यिक गुण लेखक के सन्देश को संप्रेषित करते हैं?” और “कैसे पवित्रशास्त्र को उनके मूल श्रोताओं को प्रभावित करना चाहिए था?"

ऐतिहासिक विश्लेषण। ऐतिहासिक विश्लेषण बाइबल के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे आधुनिक काल में, नवजागरण काल के आरंभ से और केवल अभी हाल ही के दशकों के साथ अंत होते हुए विवरण दिया गया है। इस अवधि के मध्य, उस इतिहास को समझना जिसका संकेत बाइबल आधारित व्याख्याओं के लिए केन्द्रीय उद्देश्य बना रहा।

ऐतिहासिक विश्लेषण के दृष्टिकोणों में बाइबल को एक बहुत ज्यादा साहित्यिक चित्र या प्रतिछाया के रूप में नहीं, बल्कि इतिहास में झांकने की खिड़की के रूप में समझा जाता है। अब, शुद्ध ऐतिहासिक विश्लेषण अन्य दृष्टिकोणों को अनदेखा नहीं करता है, बल्कि इसका प्राथमिक उद्देश्य पवित्रशास्त्र में से देखते हुए इतिहास के बारे में शिक्षा प्राप्त करना है जो कि मूलपाठ के पृष्ठभूमि में पड़ा हुआ है।

ऐतिहासिक विश्लेषण के कुछ निश्चित रूपों में, मसीही विश्वासी इन जैसे व्याख्या के प्रश्नों को पूछते हैं: “परमेश्वर के कौन से कार्यों का उल्लेख पवित्रशास्त्र में किया गया है?” “उनकी पुरातन विशेषताएँ कौन सी थीं?” “परमेश्वर का कौन सा कार्य परमेश्वर के पहले और पश्चात् के कार्यों के साथ संबंधित है?” कुल मिलाकर, ऐतिहासिक विश्लेषण का प्राथमिक उद्देश्य इस बात का पुनर्निर्माण है कि बाइबल आधारित इतिहास में क्या कुछ घटित हुआ और उन घटनाओं की विशेषताओं को उनके समयों में रहने वाले लोगों के लिए समझना।

विषयात्मक विश्लेषण। एक तीसरी रणनीति जिसे कलीसिया ने व्याख्याओं के लिए लिया उसे “विषयात्मक विश्लेषण” कह कर पुकारा जा सकता है। विषयात्मक विश्लेषण कई तरीकों में से एक ऐसा तरीका है जिसमें मसीही विश्वासियों ने बाइबल से धर्मविज्ञान को पाया है, परंतु विषयात्मक विश्लेषण पर कलीसिया की आरंभिक सदियों में मध्यकालीन अवधि के मध्य ऐतिहासिक विश्लेषण की ओर परिवर्तन होने से पहले अधिक दृढ़ता के साथ जोर दिया गया था।

विषयात्मक विश्लेषण में हम पवित्रशास्त्र को एक साहित्यिक छायाप्रति, या इतिहास में झांकने के लिए खिड़की के रूप में नहीं देखते हैं, बल्कि एक दर्पण की तरह, प्रश्नों, विषयों या प्रसंगों को संबोधित करने के लिए करते हैं जो कि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं, यद्यपि वे स्वयं बाइबल में अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। हम इस तरह के प्रश्नों को पूछते हैं जैसे, “बाइबल हमारे हितों के बारे में क्या कहती है?” “कैसे हम हमारी आवश्यकताओं की प्राप्ति कर सकते हैं?” “यह उन विषयों के बारे में क्या कहती है जिनका हमारे लिए मूल्य है?” ये विषय व्यक्तिगत बातों से आ सकते हैं; ये हमारी चारों की ओर की संस्कृति के द्वारा उठाए जाने वाले विषयों से आ सकते हैं, या यह हो सकता है कि हमारे कलीसियाई समुदाय से आ जाए। चाहे कुछ भी क्यों न हो, विश्वासयोग्य मसीही विश्वासियों ने सदैव यह जानना चाहा है कि पवित्रशास्त्र उन विषयों या प्रश्नों के बारे में क्या सीखता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।

इन तीन व्याख्या रणनीतियों को ध्यान में रखते हुए, हम अब ऐसी स्थिति में पहुँच गए हैं जहाँ हम यह देख सकते हैं कि कैसे विधिवत प्रक्रियायें व्याख्याओं अर्थात् शास्त्रीए टीका में वृद्धि करती और रूकावट बनती हैं।

वृद्धि

पहला, विधिवत धर्मविज्ञान विषयात्मक विश्लेषणों की वृद्धि करने के लिए बड़ी अच्छी तरह से सुसज्जित है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने हमें पूछने के लिए, एक सुव्यवस्थित विषयों की सूची के पारंपरिक प्रश्नों को दिया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विधिवत धर्मविज्ञान विषयात्मक विश्लेषणों के लिए एक बहुत ही सहायतापूर्ण आकार को प्रदान करता है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने यह खोज की है कि पूरी बाइबल पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक विषयों के बारे में क्या कहती है। उन्होंने पूरी बाइबल से पदों को मिलाकर देखा है और जब उन्होंने इनको पारंपरिक विषयों के साथ संबंधित किया तब इन पदों के मध्य में परस्पर-संबंध को रेखांकित किया है। विभिन्न पदों को आपस में मिलाने और संयोजित करके एक पूरा समूह बनाने की यह प्रक्रिया उस एक बात को करने से हमें बचाता है जिसे पवित्रशास्त्र एक विषय के बारे में कहता है जबकि बाकी अन्य उस विषय पर कुछ और ही कहते हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि परमेश्वर के बारे में एक पद क्या कहता है और बाकी का पवित्रशास्त्र परमेश्वर के बारे में क्या कहता है। वे सारे मनुष्यजाति के बारे में क्या कहते हैं? वे सारे उद्धार के बारे में क्या कहते हैं? विधिवत बहुत अधिक मूल्य का है क्योंकि यह बाइबल आधारित दृष्टिकोणों के इन या कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर हमें सहायता प्रदान करता है।

रूकावट

एक तरफ तो, विधिवत धर्मविज्ञान अक्सर व्याख्याओं में रूकावट बनता है क्योंकि यह पवित्रशास्त्र के साहित्यिक और ऐतिहासिक विश्लेषणों पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, विधिवत धर्मविज्ञानी जो बाइबल के अच्छे व्याख्याकार हैं सदैव बाइबल को एक साहित्य के रूप में और इतिहास को कुछ सीमा तक देखते हैं। फिर भी यह वह मुख्य तरीका नहीं जिसमें वे पवित्रशास्त्र तक पहुँचते हैं। इसी कारण से, जब विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी व्याख्या के हमारे दृष्टिकोण पर हावी होता है, यह उन बातों पर सीमाओं को निर्धारित करता है जिन्हें हम बाइबल में से प्राप्त करते हैं। और जैसा कि हम भविष्य के अध्यायों में देखेंगे, साहित्यिक और ऐतिहासिक विश्लेषण की खोज अक्सर हमें विधिवत धर्मविज्ञान के सारांशों के साथ समायोजन करने के लिए बाध्य करती है।

इस तरह से हम सामान्य अर्थों में देखते हैं कि, विधिवत धर्मविज्ञान के मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण में दोनों अर्थात् मूल्य और खतरे हैं। यह मसीही जीवन, समुदाय में सहभागिता और कुछ उल्लेखनीय सकारात्मक तरीकों में व्याख्याओं के लिए योगदान देता है। परंतु साथ ही यह हमारे ध्यान को प्रत्येक धर्मवैज्ञानिक स्रोतों के महत्वपूर्ण आयामों से दूर कर देता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम विधिवत धर्मविज्ञान में दोनों अर्थात् मूल्यों और खतरों को अपने ध्यान में रखते हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने “विधिवत धर्मविज्ञान क्या है” प्रश्न की खोज की है। हमने देखा कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान की तुलना नए नियम से की जाती है। हमने देखा कि कैसे यह कलीसिया के इतिहास के द्वारा विकसित हुआ। और हमने विधिवत धर्मविज्ञान के कुछ मूल्यों और खतरों को भी देखा।

यह सीखते हुए कि कैसे हमारी मान्यताओं को एक विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना एक ऐसी बात है जिसे मसीह के अनुयायी होने के नाते सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक को हम क्रियान्वित कर सकते हैं। पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को लेते हुए और उन्हें तर्कसंगत रूप से विधिवत प्रक्रिया में कलीसिया के लंबे समय से चली आ रही परंपराओं के अनुसार व्यवस्थित करना हमें एक पूर्ण मसीही धर्मविज्ञान को निर्मित करने के लिए सक्षम करेगा जो कि परमेश्वर को सम्मान देगा और हमें मसीह की कलीसिया के सेवकों के रूप में और भी अधिक प्रभावशाली होने के योग्य बनाएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।